॥ श्रीः ॥

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

८७

॥ श्रीः ॥

बृहद् होडाचक्रविवरणम्

सम्पादकः

पं० श्रीमुरलीधरठक्कुर ज्योतिषाचार्यः



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

Murlidharthakuren
Brihad hodachakra-
Vivaranam.

बृहद् होडाचक्र-विवरणम्

ज्यौतिषाचार्य पण्डित श्रीमुरलीधरठक्कुरेण
सङ्कलितं, तत्कृतसरलहिन्दीव्याख्यया च
समलङ्कृतम्।



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

पञ्चम संस्करण] (सर्वेऽधिकाराः प्रकाशकाधीनाः) [ई० १९६०

मूल्य ०-५०

निवेदन

यह ग्रन्थ छोटा होने पर भी अत्यन्त उपयोगी है। इसमें जन-साधारण के कार्य के लिए बहुत परिश्रम से मुहूर्तों का संग्रह एकत्र करके रखा गया है। केवल इसी छोटी सी पुस्तक के पढ़ने से पाठक को व्यावहारिक यात्रा आदि मुहूर्त, इष्ट लग्न और कन्या-वर का मेलापक सम्बन्धी समस्त विचारों का ज्ञान तुरन्त हो जायगा। इसके प्रत्येक श्लोकों की व्याख्या भी सरल हिन्दी भाषा में कर दी गई है और जगह २ पर उदाहरणों से भी अर्थ को स्पष्टरूप से समझाया गया है तथा अन्त में वधू-वर मेलापक के अनेक चक्र अलग-अलग दिये गये हैं, जिससे पाठक गण भली भाँति आचार्यों का आशय समझ लेंगे।

विद्वज्जनानुचर—

श्री मुरलीधर ठक्कुर

॥ श्रीः ॥

शतपदचक्रविवरणम्

वा

मुहूर्तसंग्रहः

नत्वा शिवं शिवां देवीं गणाधीशं तथा गुरुम् ।
मुहूर्तसंग्रहैर्युक्तं होडाचक्रं निरूप्यते ॥ १ ॥

तत्रादौ तावत्तिथीनां नामानि—

प्रतिपद् द्वितीया चैव तृतीया तदनन्तरम् ।
चतुर्थी पञ्चमी चैव षष्ठी चैव ततः परम् ॥
सप्तमी चाष्टमी चैव नवमी दशमी तथा ।
ततश्चैकादशी ज्ञेया द्वादशी च त्रयोदशी ॥
ततश्चतुर्दशी प्रोक्ता कृष्णान्तेऽमा प्रकीर्त्तिता ।
पूर्णिमा शुक्लपक्षान्ते तिथयः कथिता बुधैः ॥

प्रतिपद्, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, कृष्णपक्षमें अमावास्या और शुक्लपक्षमें पूर्णिमा इस प्रकार तिथियों की संख्या पण्डितों ने कही है ।

अथ तिथीनां स्वामिनो नामानि—

तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ।
शिवो दुर्गाऽन्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥

वह्नि (अग्नि), क (ब्रह्मा), गौरी (पार्वती), गणेश, अहि (सर्प), गुह (कार्तिकेय), रवि, शिव, दुर्गा, अन्तक (यमराज), विश्वेदेव, हरि, काम, शिव और शशि (चन्द्रमा) ये क्रमशः प्रतिपदादि तिथियों के स्वामी हैं ।

अर्थात् प्रतिपद् का स्वामी अग्नि, द्वितीया का ब्रह्मा, तृतीया का पार्वती, चतुर्थी का गणेश, पंचमी का सर्प, षष्ठी का कार्तिकेय, सप्तमी का रवि, अष्टमी

का शिव, नवमी का दुर्गा, दशमी का यमराज, एकादशी का विश्वेदेव, द्वादशी का हरि (विष्णु), त्रयोदशी का कामदेव, चतुर्दशी का शिव और पंचदशी का स्वामी चन्द्रमा हैं। [जिन तिथियों की जो देवता हैं, उनकी पूजा उन्हीं तिथियों में की जाती है।]

अथ नक्षत्रनामानि—

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी तथा।
मृगशीर्षस्तथाऽऽर्द्रा च पुनर्वसुरतः परम्॥
पुष्याश्लेषामघाप्रोक्ताः पूर्वाचोत्तरफाल्गुनी।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम्॥
अनुराधा तथा ज्येष्ठा मूलभं च ततः परम्।
पूर्वाषाढोत्तराषाढाऽभिजिच्च श्रवणं ततः॥
धनिष्ठा च ततो ज्ञेया शततारा ततः परम्।
पूर्वाभाद्रपदा प्रोक्ता ततश्चोत्तरभाद्रकम्॥
रेवती चेति भानां हि नामानि कथितानि वै।
सप्तविंशति संख्यानां सदसत्फलहेतवे॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती ये २८ नक्षत्र कहे गये हैं। पर मूल में २७ नक्षत्रों का ही नाम आया है, इसका कारण यह है कि उत्तराभाद्रपदा का अन्तिम चतुर्थांश और श्रवण का प्रथम पंचदशांश मिलकर अभिजित् का मान है। इसलिये अभिजित् की गणना अलग नहीं होती है।

संहिताग्रन्थों में तो नक्षत्रों का अलग-अलग भोग बताया गया है। उसमें सब नक्षत्रों का भोग का योग चक्रकला में २१६०० घटाकर शेष अभिजित् का भोग माना है।

अथ नक्षत्रदेवताः—

अश्विनावन्तको वह्निस्ततो धाता निशाकरः।
रुद्रोऽदितिर्गुरुः सर्पः पितरो भग एव च॥
अर्यमा च रविस्त्वष्टा वायुर्वह्निपुरन्दरौ।

मित्रः शक्रश्च निर्ऋतिः सलिलं च ततः परम् ॥
विश्वेदेवा विधिर्विष्णुर्वसवो वरुणस्ततः ।
ततोऽजपादहिर्बुध्न्यः पूषा नक्षत्रदेवताः ॥

अश्विनी का स्वामी अश्विनीकुमार, भरणी का यम, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृगशिर्ष का चन्द्रमा, आर्द्रा का रुद्र, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का बृहस्पति, आश्लेषा का सर्प, मघा का पितर, पूर्वाफल्गुनी का भग (सूर्य विशेष), उत्तराफल्गुनी का अर्यमा (सूर्य विशेष), हस्त का रवि, चित्रा का त्वष्टा (विश्वकर्मा), स्वाती का वायु, विशाखा का अग्नि और इन्द्र, अनुराधा का मित्र (सूर्य विशेष), ज्येष्ठा का इन्द्र, मूल का निर्ऋति (राक्षस), पूर्वाषाढ़ा का जल । उत्तराषाढ़ा का विश्वेदेव, अभिजित् का ब्रह्मा, श्रवण का विष्णु, धनिष्ठा का अष्टवसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वाभाद्रपदा का अहिर्बुध्न्य (सूर्य विशेष), रेवती का पूषा (सूर्य विशेष) इस प्रकार अश्विन्यादि नक्षत्रों के देवता कहे गये हैं । जिन नक्षत्रों के जो देवता हैं उन देवताओं से भी उन नक्षत्रों का ज्ञान होता है । जैसे—रुद्र से आर्द्रा, विष्णु से श्रवण, अजपाद् से पूर्वाभाद्रपदा इत्यादि ।

अथ योगनामानि—

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्ततः ।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैन्द्रौ वैधृतिस्ततः ।
क्रमादेता योगसंख्याः सप्तविंशति कीर्तिताः ॥

विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्मान् , सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान् , परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्मा, ऐन्द्र और वैधृति ये सत्ताइस योग शास्त्र में कथित हैं ।

अथ वारनामानि—

रविः सोमस्तथा भौमो बुधो गीष्पतिरेव च ।
शुक्रः शनैश्चरश्चैव वाराः सप्त प्रकीर्तिताः ॥

रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, एवं शनैश्चर ये सात वार क्रम से हैं ।

अथ तिथीनां नन्दादिसंज्ञा:—

नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ।
वारत्रयं समावृत्य भवन्ति प्रतिपन्मुखाः ।।

नन्दा—१—६—११ भद्रा—२—७—१२
जया—३—८—१३ रिक्ता—४—९—१४
पूर्णा—५—१०—१५

अथ सिद्धियोगाः—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया क्षितिजनन्दने ।
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ।।

शुक्र दिन नन्दा १।६।११, बुध दिन भद्रा २।७।१२, मंगल दिन जया ३।८।१३, शनि दिन रिक्ता ४।९।१४ और बृहस्पति दिन पूर्णा ५।१०।१५ सिद्धियोग हैं। ये यात्रा के लिए प्रशस्त हैं।

अथ मृत्युयोगाः—

आदित्यभौमयोर्नन्दा भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ।।

रवि और मङ्गल को नन्दा (१।६।११) शुक्र और सोम को भद्रा (२।७।१२), बुध को जया (३।८।१३), बृहस्पति को रिक्ता (४।९।१४) और शनि को पूर्णा (५।१०।१५) मृत्युयोग है। इसमें यात्रा नहीं करनी चाहिये।

अथ अमृतयोगाः—

चन्द्रार्कयोर्भवेत् पूर्णा कुजे भद्रा जया गुरौ ।
शनिचन्द्रजयोर्नन्दा भृगौ रिक्ताऽमृताह्वया ।।

रवि और सोम दिन पूर्णा (५।१०।१५), मङ्गल दिन भद्रा (२।७।१२) बृहस्पति दिन जया (३।८।१३), शनि और बुध दिन नन्दा (१।६।११) और शुक्र दिन रिक्ता (४।९।१४) अमृतयोग हैं। यह यात्रा के लिए मङ्गलदायक है।

अथ राशीनां नामानि—

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कः सिंहश्च कन्यका ।
तौलिश्च वृश्चिकश्चैव धनुर्मकर एव च ।

कुम्भमीनौ क्रमादेते राशयः परिकीर्तिताः ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन ये बारह राशियाँ हैं।

अथ तिथिदग्धयोगाः—

द्वादशी रविवारे च सोमे चैकादशी तथा।
भौमे तथैव दशमी तृतीया बुधवासरे॥
षष्ठी गुरौ तथा शुक्रे द्वितीया सप्तमी शनौ।
दग्धयोगा बुधैः प्रोक्ताः सर्वकर्मणि वर्जिताः॥

रवि को द्वादशी, सोम को एकादशी, मङ्गल को दशमी, बुध को तृतीया, बृहस्पति को षष्ठी, शुक्र को द्वितीया और शनि को सप्तमी दग्ध है। अतः यह शुभकर्म में त्याज्य है। रामाचार्य के मत से मङ्गल को पंचमी, शुक्र को अष्टमी और शनि को नवमी (१) दग्ध है।

अथ मासदग्धतिथयः—

चापे मीने द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः।
षष्ठी मेषे कुलीराख्ये कन्यायुग्मे तथाऽष्टमी॥
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः॥

धनु और मीन संक्रान्त्युपलक्षित मास (पूस, चैत) की द्वितीया, वृष-कुम्भ (ज्येष्ठ, फाल्गुन) की चतुर्थी, मेष-कर्क (वैशाख, श्रावण) की षष्ठी, कन्या-मिथुन (आश्विन, आषाढ़) की अष्टमी, वृश्चिक-सिंह (भाद्र, अग्रहण) की दशमी और मकर-तुला (माघ, कार्तिक) की द्वादशी दग्ध है। इसलिए शुभ कार्यों में वर्जित है।

अथ दिनार्धप्रहरविचारः—

रवौ वर्ज्याश्चतुःपञ्च सोमे सप्तद्वयं तथा।
कुजे षष्ठद्वयं चैव बुधे बाणतृतीयकम्॥
गुरौ सप्ताष्टकं चैव शुक्रे वेदतृतीयकौ।

---

(१) शनि को नवमी सिद्धियोग है, इसलिये शुभ है। परञ्च यहाँ दग्ध होने के कारण त्याज्य है। इस विरोध के परिहार में पीयूषधाराकार लिखते हैं कि शनि को नवमीसिद्ध-रिक्ता सिद्धियोग है।

शनावाद्यन्तषष्ठं च प्रहरार्धं विगर्हितम् ॥

चार प्रहर का दिन होता है। एक-एक प्रहर के दो भाग करने से एक दिन में आठ अर्धप्रहर होते हैं अर्थात् दिनमान के आठ भाग करने से प्रथम भाग को प्रथम अर्धप्रहर, दूसरे भाग को द्वितीय अर्धप्रहर इत्यादि कहा जाता है, जिसमें—

रविवार	का	४, ५	सोमवार	का	२, ७
मङ्गल	,,	२, ६	बुध	,,	३, ५
बृहस्पति	,,	७, ८	शुक्र	,,	३, ४
शनि	,,	१, ६, ८	ये अर्धप्रहर हैं।		

ये यात्रादि मङ्गल कार्यों में वर्जित हैं।

अथ रात्रावर्धप्रहरविचारः—

रवौ रसाब्धी हिमगौ हयाब्धी द्वयं महीजे शशिजे शराद्री।
गुरौ शराष्टौ भृगुजे तृतीयं शनौ रसाद्यन्तमिति क्षपायाम् ॥

रवि का ६।४, सोम का ७।४, मङ्गल का २, बुध का ५।७, बृहस्पति का ५।८ शुक्र का ३ और शनि का ६।१।८ रात्रि का अर्धप्रहर शुभकार्यों में वर्जित है।

अथ रव्यादिवारे शून्यनक्षत्राणि—

रवौ मघानुराधा च सोमे वैश्वद्विदैवते।
भौमे शतभिषाद्रा च बुधे मूलाश्विनी तथा ॥
मृगो वह्निः सुराचार्ये शुक्रेऽश्लेषा च रोहिणी।
शनौ हस्तश्च पूषा च सर्वकर्मणि निन्दिताः ॥

रवि को मघा-अनुराधा, सोम को विशाखा-उत्तराषाढ़ा, मङ्गल को आर्द्रा-शतभिषा, बुध को मूल-अश्विनी, बृहस्पति को कृत्तिका-मृगशिरा, शुक्र को रोहिणी-आश्लेषा और शनि को हस्त तथा रेवती शून्य हैं। ये सब शुभकार्य में त्याज्य हैं।

अथ आनन्दाद्यष्टाविंशतियोगाः—

आनन्दः कालदण्डश्च धूम्रो धाता तथैव च।
सौम्यो ध्वांक्षश्च केतुश्च श्रीवत्सो वज्रकं तथा ॥
मुद्गरश्छत्रमित्रे च मानसं पद्मलुम्बकौ।
उत्पातश्च तथा मृत्युः काणः सिद्धिः शुभोऽमृतः ॥

मुसलं गदमातङ्गौ राक्षसाख्यश्चरः स्थिरः ।
प्रवर्धमान एते स्युर्योगा नामसदृक्फलाः ॥

आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वाङ्क्ष, केतु, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातङ्ग, राक्षस, चर, स्थिर और प्रवर्धमान ये २८ योग यात्रा में विशेष विचारणीय हैं ।

अथ आनन्दादियोगानां गणनाप्रकारः—

दास्राद्र्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद् बुधे ।
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद् गण्या मन्दे च वारुणात् ॥

रविवार को अश्विनी नक्षत्र से, सोम को मृगशिरा से, मङ्गल को आश्लेषा से, बुध को हस्त से, बृहस्पति को अनुराधा से, शुक्र को उत्तराषाढ़ा से और शनि को शतभिषा से इष्ट नक्षत्र की संख्या गणना करके आनन्दादियोग मालूम करना चाहिये ।

जैसे—बृहस्पति के दिन रेवती नक्षत्र है तो उस दिन कौन योग होगा यह जानने के लिए उपर्युक्त क्रमानुसार अनुराधा से रेवती तक १२ संख्या हुई । इसलिए आनन्द से लेकर बारहवीं संख्या मित्र की है, अतएव मित्र योग हुआ । इसका फल भी उत्तम है । इसमें यात्रा शुभ है । इसी प्रकार और भी समझना चाहिये ।

अथ गर्भाधानम्—

स्त्रीणामृतुर्भवति षोडशवासराणि
तत्रादितः परिहरेच्च निशाश्चतस्रः ॥
युग्मासु रात्रिषु नरा विषमासु नार्यः
कुर्यान्निषेकमथ तेष्वपि पर्ववर्ज्यम् ॥

स्त्रियों के गर्भाधन में रजोदर्शन के दिन से सोलह दिन तक गर्भाधान का समय है । जिसमें प्रथम चार रात्रि छोड़कर शेष बारह दिन के भीतर विषम रात्रि ५-७-९ इत्यादि में सहवास करने से कन्या और सम रात्रि ६-८-१० इत्यादि में सहवास करने से पुत्र होता है । किन्तु इसके भीतर पर्वदिन में सहवास का निषेध है ।

पर्वाणि यथा—

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रान्तिरेव च ॥

चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और संक्रान्ति ये पर्व के दिन हैं ।

अथ गर्भाधाने विहितनक्षत्राणि—

हरिहस्तानुराधोश्च स्वातीवरुणवासवम् ।
त्रीण्युत्तराणि मूलं च रोहिणी चोत्तमा स्मृता ॥
चित्रादैत्येन्द्र वा तिष्य तुरगं च भमध्यमम् ।
शेषभान्यधमान्याहुर्वर्जनीया निषेकके ॥

श्रवणा, हस्त, अनुराधा, स्वाती, शतभिषा, धनिष्ठा, उत्तरफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, मूल और रोहिणी ये नक्षत्र गर्भाधान में उत्तम हैं । चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य और अश्विनी ये नक्षत्र गर्भाधान के लिए मध्यम कहे गये हैं और शेष नक्षत्र वर्जित हैं ।

अथ गर्भाधाने विहिततिथयः—

नन्दा भद्रा स्मृता पुंसि स्त्रीषु पूर्णा जया स्मृता ।
रिक्ता नपुंसके ज्ञेया तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥

नन्दा तथा भद्रा तिथि पुरुष संज्ञक हैं । जया और पूर्णा स्त्री संज्ञक हैं । रिक्ता नपुंसक है । पुरुष और स्त्री संज्ञक तिथि में गर्भाधान शुभ है और नपुंसक संज्ञक में वर्जित है ।

अथ गर्भाधाने विहितदिनानि—

वासराः पुत्रदाः प्रोक्ताः कुजार्कगुरवो ध्रुवम् ।
कन्यादौ भृगुशीतांशू क्लीबदौ शनिचन्द्रजौ ॥

बृहस्पति, रवि और मङ्गल इन दिनों में गर्भाधान से पुत्र होता है, और शुक्र, एवं सोम में कन्या तथा शनि और बुध में नपुंसक होता है ।

अथ पुंसवनम्—

मासे द्वितीयेऽप्यथवा तृतीये पुन्नामधेये ग्रहऋक्षचक्रे ।
अक्षीणचन्द्रे कुजभानुजीवे वारे शुभं पुंसवनादि कर्म ॥

दूसरे या तीसरे महीनों में, पुरुषसंज्ञक नक्षत्रों में, शुक्ल पक्ष तथा सोम, मङ्गल, रवि, और बृहस्पति इन दिनों में पुंसवन कर्म शुभ है ।

अन्यच्च—

नन्दाभद्रार्कजीवे कुजशशिपवने मैत्रमूले मृगेऽश्वे।
पौष्णादित्यां तु पुष्ये श्रुतित्रयपितरे तारकाचन्द्रशुद्धे॥
लग्ने कन्यालिकर्के हरिझषसहिते क्रूरगोत्रायषष्ठे।
सौम्याः केन्द्रत्रिकोणे शुभदिनसहिते कारयेत्पुंसकर्म॥

नन्दा और भद्रा तिथि हो एवं रवि, बृहस्पति, मंगल और सोम दिन हों तथा स्वाती, अनुराधा, मूल, मृगशिरा, अश्विनी, रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और मघा इन नक्षत्रों में चन्द्र, और तारा अनुकूल हो एवं कन्या, वृश्चिक, कर्क, सिंह और मीन लग्न में हो और पापग्रह तीसरे छठे और ग्यारहवें में हों, तथा शुभग्रह नवें पांचवें या केन्द्र में हों तो पुंसवन कर्म करना शुभ है।

अथ सीमन्तकर्म—

मासेशे प्रबले शुभेक्षितविधौ मासेऽथ षष्ठेऽष्टमे
मैत्रे पुंसवनोदितर्क्षसहिते रिक्ताविहीने तिथौ।
सीमन्तोन्नयनं मृगाजरहिते लग्ने नवांशोदये
योज्यं पुंसवनोदितं यदपरं तत्सर्वमत्रापि च॥

मासेश (मासस्वामी) बली हो चन्द्रमा शुभग्रह से देखे जाते हों, छठे और आठवें महीने में, पुंसवन में कहे हुए नक्षत्रों सहित मैत्र संज्ञक नक्षत्रों में, रिक्ता वर्जित तिथि में, मेष-मकर से रहित अन्य लग्न के नवांश उदय हों और शेष विधि पुंसवन में कहे हुये विचार कर सीमन्तकर्म करना शुभ होता है।

अथ सूतिकागृहनिर्माणकालः—

प्रसवाथ गृहं कुर्याद् आदित्यादि शुभे दिने।
रोहिण्यां श्रवणायां च प्रवेशस्तत्र कीर्त्तितः॥

सूतिका के सुखप्रसवार्थ सूर्यादि शुभ दिनों में गृह बनवाना शुभ है। तथा रोहिणी और श्रवण में प्रवेश करना शुभ है।

अथ शिशोर्मातुः स्तन्यपानविचारः—

पुनर्वसौ पुष्यमघासु मूले त्रिरुत्तरा चैव विशाखिकासु।
वारेऽर्कजीवे बुधशुक्रचन्द्रे स्तन्यप्रदानं शुभदं शिशूनाम्॥

पुनर्वसु, पुष्य, मघा, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरभाद्र और विशाखा इन नक्षत्रों में, रवि, सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्र इन दिनों में, रिक्ता (४।९।१४) वर्जित तिथि में बालक को अपनी माता को प्रथम बार स्तनपान करना शुभ है।

अथ सूतीस्नानम्—

करेन्द्रभाग्यानिलवासवान्त्यमैत्रध्रुवाश्विध्रुवभेऽह्नि पुंसाम् ।
तिथावरिक्ते शुभमामनन्ति प्रसूतिकास्नानविधौ मुनीन्द्राः ॥
स्नाता प्रसूताप्यसुता बुधे च स्नाता च वन्ध्या भृगुनन्दने च ।
सौरे च मृत्युः पयहानिरिन्दौ पुत्रार्थलाभो रविभौमजीवे ॥

हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, धनिष्ठा, रेवती, और मैत्रसंज्ञक एवं ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में तथा ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रोक्त दिन में, एवं रिक्ता वर्जित तिथि में, बालक सहित प्रसूती को स्नान करना मुनि लोग शुभ कहे हैं ।

बुधवार में स्नान करने से प्रसूता स्त्री असुता (पुत्र रहित) हो जाती है, शुक्रवारमें स्नान करसे से वन्ध्या (मृतवन्ध्या) होती है, शनिवार में स्नान मृत्यु कारक होता है, सोमवार में स्नान करने से स्तन्य (दूध) का नाश होता है तथा रवि, मङ्गल, और गुरुवारमें स्नान करने से पुत्र, धन, और इच्छित वस्तु प्राप्त होती है ।

अथ प्रसूतिशुद्धदिवसाः—

गावश्च महिषी चैव अजाश्च ब्राह्मणी तथा ।
दशाहेनैव शुद्ध्यन्ति प्रसूतिः स्याद् यदा तदा ॥

गौ, महिषी, बकरी, भेंड़ी और ब्राह्मणी ये सब प्रसूति होने पर दशदिन के बाद शुद्ध होती हैं ।

अथ नामकरणम्—

वस्वादित्यगुरूत्तरादितिमृगैश्चित्राऽनुराधानिलैः
मूलावैष्णवरेवतीन्दुतुरगैः संज्ञां प्रकुर्याच्छिशोः ।
वारेऽहर्पतिचन्द्रवाक्पतिबुधे लग्ने गुरौ शोभने
सौम्यैः केन्द्रनवात्मजन्मसहितैः पापैश्च शेषस्थितैः ॥

धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढा) हस्त, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, मूल, श्रवण, रेवती, ज्येष्ठा और अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध और बृहस्पति दिनों में शुभ लग्नस्थ बृहस्पति हों और शुभग्रह १. ४. ७. १०. ९. ५. इन स्थानों में हों या जन्म राशि में शुभग्रह हों, पाप ग्रह शेष स्थान में हों तो नामकरण शुभ है ।

अथ दोलारोहणम्—

धृति-भूपार्कपदंदन्त-प्रमिते शुभवासरे ।

मृदु-ध्रुव-क्षिप्र-चरे सद्वारे सत्तिथौ सुधीः ॥

जन्म दिवस से क्रमशः धृति १८ भूप १६ अर्क १२ दिग् १० दन्त ३२ इन दिनों में एवं शुभ दिन में मृदु, चर, ध्रुव और क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में. तथा शुभ तिथि युक्त मुहूर्त में दोलारोहण बालक के लिये शुभ है ।

अथ खट्वारोहणम्—

अभीष्टपुण्ये दिवसे चन्द्रताराबलान्विते ।
मृदुध्रुवक्षिप्रभेषु स्वमाता कुलयोषितः ॥
योगशायिं हरिं स्मृत्वा प्राक्शीर्षं विन्यसेच्छिशुम् ॥

अभीष्ट पुण्य दिवस में चन्द्र तारानुकूल होने पर मृदु, ध्रुव, और क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में अपनी माता या अपनी वंश के कोई श्रेष्ठ वर्ग की स्त्री योगशायी भगवान् का स्मरण करके बालक को पूर्व शिरहाने सुलावे ।

अथ निष्क्रमणम्—

आर्द्राऽधोमुखवर्जितानुपहतर्क्षे वाप्यरिक्ते तिथौ
वारे भौमशनीतरे घटतुलासिंहालिकन्योदये ।
सद्दृष्टेऽथ चतुर्थमासि यदि वा मासे तृतीये शशि-
न्यक्षीणे शुभदं शिशोरथ गृहान्निष्कासनं कारयेत् ॥

आर्द्रा, अधोमुख और सूर्य किरण से हत नक्षत्रों से रहित नक्षत्रों में, रिक्ता वर्जित तिथि और मङ्गल तथा शनि रहित दिनों में कुम्भ, तुला, सिंह, वृश्चिक और कन्या लग्नों में शुभग्रह की इष्टि हो, तीसरे और चौथे महीने में, शुक्ल पक्ष में बालक को प्रथमतः बाहर निकालना शुभ है ।

अथ भूम्युपवेशनम्—

पृथ्वीं वराहं विधिवत्प्रपूज्य शुद्धे कुजे पञ्चममासि बालम् ।
क्षिप्रध्रुवे सत्तिथिवासराद्ये निवेशयेत्कौ कटिसूत्रबद्धम् ॥

पृथ्वी और वराहरूप भगवान् की विधिवत् पूजा करके, मङ्गल शुद्ध हो, पांचवें महीने में क्षिप्र और ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में शुभ तिथि और शुभ दिन में बालक को कटि सूत्र (कमर बन्द) कमर में बांध कर पृथ्वी पर बैठाना शुभ है ।

अथ शिशुविलोकनम्—

तृतीये मासि यात्रोक्ततिथावह्नयर्कचन्द्रयोः ।
वारे च कुलरीत्या वा शुभे शिशुविलोकनम् ॥

तीसरे महीने में और यात्रा में कहे हुए तिथि नक्षत्रों में, रवि, सोम दिनमें, अपने कुलाचार के अनुसार बालक को प्रथम वार देखना शुभ है।

अथ दन्तोत्पत्तिकथनम्—

जन्मतः पञ्चमासेषु दन्तोत्पत्तिर्न शोभना।
शुभा षष्ठादिके ज्ञेया न सदन्तजनिः शुभा॥

जन्म से पाँचवें महीने तक बालक को दाँत होना अशुभ है और छठे आदि महीने से शुभ है। तथा दाँत के सहित बालक का जन्म होना शुभ नहीं है।

अथ अन्नप्राशनम्—

रेवत्यश्विपुनर्वसूहरियुगब्राह्मानुराधागुरु-
स्वातीभानुमघाविशाखरजनीनाथोत्तरात्वाष्ट्रभे।
वारे सूर्यशशांकबोधनगुरौ शुक्रेप्यरिक्ते तिथा-
वन्नप्राशनमीरितं मिथुनगोकन्याझषे सूरिभिः॥

रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, अनुराधा, पुष्य, स्वाती, हस्त, मघा, विशाखा, मृगशिरा, तीनों उत्तरा और चित्रा इन नक्षत्रों में तथा रवि, सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन दिनों में तथा रिक्ता वर्जित तिथि में एवं मिथुन, वृष, कन्या और मीन लग्नों में मुनियों ने अन्नप्राशन शुभ कहा है।

अथ ताम्बुलभक्षणमुहूर्तः—

मूलाश्विमित्रकरपुष्यहरीन्दुपूषा चित्रोत्तरापवनशक्रपुनर्वसौ च।
वारे रवीन्दुगुरुबोधनभार्गवाणां ताम्बूलभक्षणविधिः शुभदः शिशूनाम्॥

मूल, अश्विनी, अनुराधा, हस्त, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, तीनों उत्तरा, स्वाती, ज्येष्ठा और पुनर्वसु इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बृहस्पति, बुध, और शुक्र दिनों में बालक को पान खिलाना शुभ है।

अथ चूडाकरणम्। तत्र समयनियमः—

न जन्ममासे न च जन्मभे तथा विधौ विरुद्धे शततारकासु।
युग्माब्दमासे न च कृष्णपक्षे चूडा न कार्या खलु चैत्रमासे॥

जन्ममास, जन्मनक्षत्र तथा विरुद्ध चन्द्र, शतभिषा व सम वर्ष जैसे २,४,६,८, इत्यादि, सम महीना, कृष्ण पक्ष और चैत्रमास ये सब चूड़ाकरण में वर्जित हैं।

अथ चूड़ाकरण मुहूर्त्तः—

पौष्णाश्वितिष्यवसुवासववासुदेववातेंदुचन्द्रवरुणादितिचित्रभेषु।

चारेषु सोमबुधवाक्पतिभार्गवाणां क्षौरं हितं शुभफलं शुभतारकासु ॥

रेवती, अश्विनी, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, ज्येष्ठा, स्वाती, हस्त, मृगशिरा, शतभिषा पुनर्वसु और चित्रा इन नक्षत्रों में, सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्र दिनों में शुभ तारा हो तो चूड़ाकरण शुभ होता है ।

अथ कर्णवेधः—

हस्तादितिश्रवणमैत्रभवासवेषु पुष्याश्विितिष्यमरुदिन्दुसचित्रभानि ।
श्रेष्ठानि मूलवरुणात्मजभानि पूर्वात्रीण्युत्तरात्रितयभानि भनिन्दितानि ॥

हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, अश्विनी, रेवती, स्वाती, मृगशिरा, और चित्रा ये नक्षत्र कर्णवेध में श्रेष्ठ हैं और मूल, शतभिषा, तीनों पूर्वा और तीनों उत्तरा कर्णवेध में वर्जित हैं ।

अथ अक्षरारम्भः—

हस्तादित्यसमीरमित्रपुरजित् पौष्णाश्विचित्राच्युते
चारार्कांशदिनोदयादिरहिते चांशौ स्थिते चोभये ।
पक्षे पूर्णनिशाकरे प्रतिपदं रिक्तां विहायाष्टमीं
षष्ठीमष्टमभाजि शुद्धभवने प्रोक्ताऽक्षरस्वीकृतिः ॥

हस्त, पुनर्वसु, स्वाती, अनुराधा, आर्द्रा, रेवती, अश्विनी, चित्रा और श्रवण इन नक्षत्रों में मङ्गल और सूर्य के नवांश रहित लग्न में तथा सूर्य और मङ्गल को छोड़कर शेष दिनों में शुक्लपक्ष में, प्रतिपद्, रिक्ता, षष्ठी और अष्टमी रहित तिथि में अष्टम भवन शुद्ध हो तो बालक को अक्षरारम्भ कराना शुभ है ।

अथ विद्यारम्भः—

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टप्रदाता
कर्तुश्चायुश्चिरमपि करोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ।
नीहारांशौ भवति जडता पञ्चता भूमिपुत्रे
छायासूनावपि च मुनयः कीर्त्तयन्त्येवमाद्याः ॥

हस्ताश्वियुक्श्रवणचित्रसमीरमित्रपुष्यादितीन्दुनिर्ऋतिवसुवारुणेषु ।
पूर्वोत्तराकमलसम्भवपौष्णभेषु विद्या श्रुतिस्मृतिमुखा कथिता द्विजानाम् ॥

बृहस्पति, शुक्र और बुध इन दिनों में विद्यारम्भ अभीष्ट देने वाला और आयु की वृद्धि करने वाला होता है । रविवार में मध्यम है, और सोमवार को जड़ता तथा मङ्गल और शनिवार को विद्यारम्भ मृत्यु देता है

पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, अश्विनी, श्रवण, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती इन नक्षत्रों में विद्यारम्भ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के लिये श्रेष्ठ कहा गया है।

अथ उपनयनमुहूर्तः—

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवती-
ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते।
गोमीनौ प्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रार्कजीवेन्दुजे
पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमिह श्रेष्ठं द्वितीयाद्वयम्॥

पूर्वाषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य, और पूर्वाफाल्गुनी, इन नक्षत्रों में सूर्य के उत्तरायण रहने पर और शुक्ल पक्षमें, वृष, मीन, कन्या, मेष, सिंह, और धनु इन लग्नों में, शुक्र, रवि, बृहस्पति और बुध दिनों में, पञ्चमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी द्वितीया और तृतीया तिथि में व्रतबन्ध (उपनयन) श्रेष्ठ है।

अथ उपनयने वर्षशुद्धिः—

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाऽहुर्बुधाः॥

ब्राह्मणों के लिये गर्भ से या जन्म से आठवें और पांचवें वर्ष में, क्षत्रियों के लिये गर्भ से या जन्म से छठे और ग्यारहवें वर्ष में, एवं वैश्य के लिये आठवें और बारहवें वर्ष में व्रतबन्ध विद्वानों ने श्रेष्ठ कहा है, और कहे हुए समय यदि द्विगुण व्यतीत हो जाय तो 'गौण' काल होता है।

अथ उपनयने गुरुशुद्धिः—

बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयाऽन्यत्र निन्दितः॥

बालक या कन्या के जन्म राशि से ९, ५, ११, २, ७, राशि में स्थित गुरु श्रेष्ठ हैं और १०, ६, ३, १, इन राशियों में स्थित गुरु निषिद्ध हैं अर्थात् श्रेष्ठ नहीं हैं।

अथ गुरुदौष्ट्यादौ परिहारमाह—

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।

रिःफाष्टतुर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥

अपने उच्च में, अपने गृह में, अपने मित्र की राशि में, अपने नवांश में, अपने वर्गोत्तम में स्थित रहने से गुरु द्वादश, चतुर्थ, अष्टम राशि में रहने पर भी शुभ हैं। नीच और शत्रु राशि में स्थित गुरु शुभ होने पर भी अशुभ फल देते हैं।

अथ छुरिकाबन्धनम्—

विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे ।
छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ॥

चैत्र को छोड़ व्रतबन्ध में कहे हुये महीनों में भौमास्त तथा कुजवार को छोड़कर विवाह से पहले राजाओं को हथियार बांधना शुभ है।

अथ वरवरण (तिलक) मुहूर्त्तः—

वरवृत्तिं शुभे काले गीतवाद्यादिभिर्युतः ।
ध्रुवभे कृत्तिकापूर्वाः कुर्याद्वापि विवाहभे ॥
उपवीतं फलं पुष्पं वासांसि विविधानि च ।
देयं वराय वरणे कन्याभ्रात्रा द्विजेन वा ॥

शुभ मुहूर्त्त में गीत वाद्य से युक्त होकर ध्रुवसंज्ञक, कृत्तिका, तीनों पूर्वा और विवाह में कहे हुये नक्षत्रों में, यज्ञोपवीत, फल पुष्प तथा अनेक प्रकार के वस्त्र, रत्न आदि से युक्त होकर कन्या के भाई या ब्राह्मण वर का वरण (तिलक) करे।

अथ कन्यावरणम्—

पूर्वात्रयश्रवणमित्रभवैश्वदेवहौताशवासवसमीरणदैवतेषु ।
द्राक्षाफलेषु कुसुमाक्षतपूर्णपाणिरश्रान्तशान्तहृदयो वरयेत्कुमारीम् ॥

तीनों पूर्वा, श्रवण, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, स्वाती और विशाखा इन नक्षत्रों में फल-पुष्पाक्षत से पूर्ण अञ्जलिबद्ध होकर शान्तिपूर्वक कुमारी (कन्या) का वरण करना शुभ है।

अथ तैलहरिद्रालेपनम्—

मेषादिराशिजवधूवरयोर्बटोश्च तैलादिलेपनविधौ कथिताऽत्र सङ्ख्या ।
शैला दिशः शरदिगक्षनगाद्रिबाणबाणाक्षबाणगिरयो विबुधैस्तु कैश्चित् ॥

वक्ष्यमाण शतपद-चक्रानुसार वर, कन्या या कुमार का नामाद्यक्षर से

नामराशि जानकर मेषादि राशिक्रम से तैलादिलेपन में पण्डितों ने ७, १०, ५, १०, ५, ७७, ५, ५, ५, ५, ७, संख्या कही है।

अथ मण्डपनिर्माणम्, तस्य लक्षणम्—

मङ्गलेषु च सर्वेषु मण्डपो गृहमानतः।
कार्यः षोडशहस्तो वा द्विषड्ढस्तो दशावधि॥
स्तम्भैश्चतुर्भिरेवात्र वेदी मध्ये प्रतिष्ठिता।
शोभिता चित्रिता कुम्भैरासमन्ताच्चतुर्दिशम्॥
द्वारविद्धा बलीविद्धा कूपवृक्षव्यधा तथा।
न कार्या वेदिकाः तज्ज्ञैः शुभमङ्गलकर्मणि॥

सब मङ्गल कार्यों में कर्त्ता के हाथ से सोलह, बारह या दश हाथ चारों तरफ बराबर माप का मण्डप बनाना चाहिये। जिसके बीच में एक सुन्दर वेदी, चार स्तम्भ और चारों दिशा अनेक रङ्ग से चित्रित शोभायमान कलश से युक्त रहे। द्वार, कूप, वृक्ष, खात, दीवार इत्यादि के वेध से रहित विद्वानों के बतलाये हुए मार्ग से बनाना श्रेष्ठ है।

अथ मण्डपनिर्माणमुहूर्त्तः—

ऐशान्यां स्थापयेत्कुम्भं सिंहादित्रिभगे रवौ।
वृश्चिकादित्रिभे वायौ नैर्ऋत्यां कुम्भतस्त्रिभे।
वृषात्त्रये तथाऽऽग्नेय्यां स्तम्भखातं तथैव हि।

सिंहादि तीन राशियों में सूर्य के रहने से ईशान कोण में स्तम्भ तथा कुम्भ का पहले स्थापन करना शुभ है। वृश्चिक आदि तीन राशियों में रहने से वायु कोण में, कुम्भ आदि तीन राशि में नैर्ऋत्य कोण में और वृष आदि तीन राशियों में सूर्य के होने से अग्नि कोण में स्तम्भ और घट का स्थापन शुभ है।

अथ विवाहमासाः—

दिनाधिपे मेषवृषालिकुम्भनृयुग्मनक्राख्यघटर्भसंस्थे॥
माघद्वये माधवशुक्रयोश्च मुख्योऽथ वा कार्त्तिकमार्गयोश्च॥

सूर्य के मेष, वृष, वृश्चिक, कुम्भ, मिथुन, और मकर में रहने से माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, कार्तिक, अग्रहण आदि महीनें में विवाह शुभ होता है।

अथ विवाहतिथयः—

प्रतिपद् दुःखजननी द्वितीया प्रीतिवर्द्धिनी।

तृतीयायां च सौभाग्यं चतुर्थी धननाशिनी ॥
पञ्चम्यां सुखवित्तानि षष्ठी विघ्नप्रदायिनी ।
विद्याशीलसुखाप्तिः स्यात् सप्तम्यामफलाऽष्टमी ॥
नवमी शोकदा प्रोक्ता आनन्दो दशमीदिने ।
सुखमेकादशी ज्ञेया सफला द्वादशी स्मृता ।
मानपुत्रा त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तु दोषदा ॥
फलं बहुविधं नित्यं पञ्चदश्यां विशेषतः ।
अमायां चैव रिक्तायां करणे विष्टिसंज्ञके ।
यः करोति विवाहं च शीघ्रं याति यमालयम् ॥

प्रतिपत्, द्वितीया, तृतीया, चौथ, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी इन तिथियों में विवाह होने से क्रमशः दुःख, प्रीति, सौभाग्य, धननाश, सुख और वित्त, विघ्न, विद्या-शील और सुखकी प्राप्ति, निष्फल, शोक, आनन्द, सुखप्राप्ति, मनोरथ सिद्धि, यश और लाभ, कष्ट ये फल होते हैं। और पञ्चदशी (पूर्णिमा) में अनेकविध सुख लाभ होता है। अमावास्या, रिक्ता (चतुर्थी, चतुर्दशी, नवमी), भद्रा में यदि विवाह किया जाय तो शीघ्र ही मृत्यु होती है।

अथ विवाहदिनानि—

गुरुशुक्रेन्दुपुत्राणां दिनेषु परिणीयते ।
या कन्या सा भवेन्नित्यं भर्तुश्चित्तानुवर्त्तिनी ॥
अर्कार्किभौमवाराणां दिनेषु कलहप्रिया ।
सापत्न्यं समवाप्नोति तुषारकरवासरे ॥

बृहस्पति, शुक्र और बुध दिनों में विवाह होने से कन्या स्वामी को प्रिय करनेवाली होती है। सूर्य, शनि तथा मङ्गल दिन में कलहकारिणी होती है और सोमवार को विवाह होने से सापत्न्य (सौतिन) वाली होती है।

अथ विवाहनक्षत्राणि—

सौम्यपित्र्यर्क्षहस्ताश्च मैत्रनैर्ऋतिवायवः ।
त्रीण्युत्तराणि पौष्णं च रोहिणी शोभनप्रदा ॥
अन्याः सर्वा विवर्ज्याः स्युस्ताराः परिणये सदा ॥

सौम्यसंज्ञक, मघा, हस्त, अनुराधा, मूल, स्वाती, तीनों उत्तरा, रेवती और

रोहिणी ये सभी नक्षत्र विवाह में शुभप्रद हैं, और शेष नक्षत्र विवाह में वर्जित हैं।

अथ विवाहलग्नानि—

जारसक्ता क्रिये लग्ने वृत्तिभ्रष्टा वृषोदये।
कुलद्वये शुभा प्रोक्ता तथा च मिथुनोदये॥
नृशंसा कुलटा कर्के सिंहे वन्ध्या सकृत्प्रसूः।
पतिश्वशुरयोः प्रीता कन्यायां सुरतप्रिया॥
तुलोदये धनाढ्या स्याद् वृश्चिके नित्यमास्थिता।
कुलटा चापपूर्वार्द्धे प्रौढा चातिसती परे॥
परशक्त्या मृगे कुम्भे मीने दुश्चारिणी द्वयोः।
बलिनो राशयः सर्वे यथाप्रोक्तफलप्रदाः॥*

मेष लग्न में अन्य पुरुष में आसक्ता, वृष में वृत्तिभ्रष्टा, मिथुन में मातृ-पितृकुल में श्रेष्ठ, कर्क में विश्वासघातिनी, सिंह में वन्ध्या, या काकवन्ध्या, कन्या में स्वामी और श्वशुर की प्रीति करने वाली तथा सुरतप्रिया, तुला में धनाढ्या, वृश्चिक में श्रद्धावती, धनु के पूर्वार्द्ध में कुलटा और उत्तरार्द्ध में सती, मकर में कन्या में आसक्ता एवं कुम्भ और मीन में विवाह होने से स्त्री व्यभिचारिणी होती है। यह फल प्रत्येक राशिके बलवान् होने से विवाह में ठीक ठीक होता है।

इति विवाहप्रकरणम्।

अथ वधूप्रवेशः। तत्र समयनियमः—

आरभ्योद्वाहदिवसात् षष्ठे वाप्यष्टमे दिने।
वधूप्रवेशः सम्पत्त्यै दशमेऽथ समे दिने॥

विवाह के दिन से सोलह दिनके भीतर छठा, आठवां, दशवां या सम दिन जैसे २-४ इत्यादि दिनों में वधूप्रवेश शुभदायक है।

---

* नाह्लिदत्तपञ्चविंशतिकायाम्—

रेवत्युत्तररोहिणीमृगमघामूलानुराधाकर-
स्वातीषु प्रमदातुलामिथुनके लग्ने विवाहः शुभः।
मासाः फाल्गुनमाघमार्गशुचयो ज्येष्ठस्तथा माधवः
शस्ताः सौम्यदिनं तथैव तिथयो रिक्ताकुहूर्वर्जिताः॥

अथ वधूप्रवेशमुहूर्त्तः—

पौष्णात् कभाच्च श्रवणाच्च युग्मे हस्तत्रये मूलमघोत्तरासु ।
पुष्ये च मैत्रे च वधूप्रवेशो रिक्तेतरे व्यर्ककुजे च शस्तः ॥

रेवती, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, मघा, तीनों उत्तरा, पुष्य और अनुराधा इन नक्षत्रों में, रिक्ता वर्जित तिथि, रवि और मङ्गल छोड़कर शेष दिनों में वधूप्रवेश शुभ है ।

अथ द्विरागमनशब्दार्थः—

विवाहसमये बाला व्रजेद्भर्तृगृहं प्रति ।
पुनस्तातगृहाद्यात्रा तद्द्विरागमनं स्मृतम् ॥

विवाह के बाद स्वामी के घर जाना वधूप्रवेश है, उसके बाद पिता के घर से यात्रा का नाम द्विरागमन है ।

अथ द्विरागमने वर्षव्यवस्था—

धनं हानिः सुखं नाशो भोगो वैरं ततः सुखम् ।
प्रथमाब्दात् फलं ज्ञेयं क्रमाद्बध्वा द्विरागमे ॥
श्वश्रूं हन्त्यष्टमे वर्षे श्वशुरं च दशाब्दके ।
सम्प्राप्ते द्वादशे वर्षे पतिं हन्ति द्विरागमे ॥

विवाह से लेकर प्रथम आदि वर्षों में द्विरागमन होने से धन, हानि, सुख, नाश, भोग, वैर और सुख ये फल होते हैं तथा आठवें वर्ष में सास की, दशवें वर्ष में श्वशुर की और बारहवें वर्ष में द्विरागमन होने से स्वामी की मृत्यु होती है ।

अथ द्विरागमने मासाः—

वैशाखे सुभगा प्रभूतधनिनी मार्गे च पुत्रान्विता
फाल्गुन्ये पतिवल्लभा प्रियजने नित्यं प्रिया पुत्रिणी ।
वन्ध्या दुर्भगनिर्धना विरहिणी सोद्वेगिता नित्यशो
नूनं देवसुतापि दुःखमतुलं प्राप्नोति मासान्तरे ॥

वैशाख में सौभाग्यवती तथा धन संयुक्ता होती है । और अग्रहण में बहुपुत्रा, फाल्गुन में पतिप्रिया, बन्धुवर्ग में प्रेम करनेवाली और पुत्रवती होती है । इससे अन्य महीनों में द्विरागमन होने से वन्ध्या, दुर्भगा, दरिद्रा, स्वामी से त्यक्ता, उद्वेगयुक्ता तथा स्वामी और पुत्र से बड़े-बड़े कष्ट पाने वाली होती है ।

अथ द्विरागमनमुहूर्त्तः—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेऽपि मूले तिथौ गमोक्ते शुभवासरे च ।
रवीज्यशुद्धे समये वधूनां द्विरागमः शुक्लदले प्रशस्तः ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर संज्ञक, मूल इन नक्षत्रों में, यात्रा में कहे हुए तिथि तथा शुभ दिन में, रवि और बृहस्पति के शुद्ध रहने पर शुक्लपक्ष में द्विरागमन करना श्रेष्ठ है ।

इति द्विरागमनप्रकरणम् ।

अथ नववधूपाकारम्भदिनम्—

मृगोत्तरातिष्यकृशानुशाक्रे श्रुतित्रये ब्रह्मद्विदैवपौष्णे ।
शुभे तिथौ व्याररवौ प्रकुर्यान्नवा वधूर्नूतनपाककर्म ॥

मृगशिरा, तीनों उत्तरा, पुष्य, कृत्तिका, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी, विशाखा और रेवती इन नक्षत्रों में, शुभ तिथि में और मङ्गल तथा रविवार को छोड़कर शेष दिनों में नववधू को सर्वप्रथम पाक करना (रसोई करना) श्रेष्ठ है ।

अथ स्त्रीणां केशवन्धनम्—

वातोत्तराश्रवणशङ्करवाजिमूल-
पुष्यादितीन्दुकरपौष्णपुरन्दरेषु ।
पक्षे सिते रविनिशाकरसौम्यवारे
धम्मिल्लबन्धनविधिः शुभदो मृगाक्ष्याः ॥

स्वाती, तीनों उत्तरा, श्रवण, आर्द्रा, अश्विनी, मूल, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, रेवती और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में, शुक्लपक्ष में, रवि, सोम और शुभ वारों में स्त्रियों के लिये केशवन्धन (चोटी मढ़वाना) शुभ है ।

अथ लाक्षाभरणधारणम्—

यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या तथा
वह्निं भूतगुणाब्धिसप्तनयनं पृथ्वीकरेन्दुक्रमात् ।
सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजा जीवः शशी केतवः
क्रूरे हानिशुभे शुभं च कथितं चक्रे करे भूषणम् ॥

सूर्य के नक्षत्र से क्रमशः ३, ५, ३, ४, ७, २, १, २, १ इतने संख्यक

नक्षत्रों में सूर्य, मङ्गल, शुक्र, बुध, राहु, शनि, बृहस्पति, चन्द्र और केतु इनमें शुभग्रहों के अंश में, शुभ और पापग्रहों के अंश में स्त्रियोंके लिए चूड़ी पहनना अशुभ कहा है।

अथ अलङ्करणधारणम्—

चित्राविशाखापवनानुराधावस्वश्विनीभास्कररेवतीषु।
आदित्यशुक्रेन्दुजजीववारे लग्ने स्थिरे स्त्री कनकादि दध्यात्॥

चित्रा, विशाखा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त और रेवती, इन नक्षत्रों में सूर्य, शुक्र, बुध और बृहस्पति दिन में तथा स्थिर लग्न में स्त्री के लिये सुवर्ण आदि अलंकरण (जेवर) धारण करना शुभ है।

अथ चुल्हिकास्थापनम्—

तुरगयमविशाखाब्राह्मसौम्योत्तरेषु
ज्वलनजलधनिष्ठामूलशूलायुधेषु।
रविशनिकुजवारे चुल्हिका स्थापनीया
ज्वलति सुचिरधीरव्यञ्जनस्वादुकर्त्री॥

अश्विनी, भरणी, विशाखा, रोहिणी, आश्लेषा, तीनों उत्तरा, कृत्तिका, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, मूल और शतभिषा इन नक्षत्रों में, रवि, शनि, तथा कुज, दिनों में चुल्हिका स्थापन करने से चुल्हिका ठीक से जलती है और भोजन स्वादिष्ट बनता है।

अथ चुल्हिकोपरि मृद्भाण्डस्थापनम्—

चुल्हिकोपरि मृद्भाण्डं स्थापयेन्नैव कामिनी।
भृगुचन्द्रमसोर्वारे, स्नायान्नैव च वारुणे॥

शुक्र और चन्द्रवार को कामिनी (स्त्री) चूल्हे पर मृद्भाण्ड (मिट्टी के बरतन) का स्थापन न करें। और शतभिषा नक्षत्र में स्नान न करे।

अथ शतभिषायां स्नाने परिहारः—

चन्द्रे शतभिषां प्राप्ते नारी न स्नानमाचरेत्।
भ्रमात् स्नाता तदा पुष्पगन्धाद्यैः पूजयेत्पतिम्॥

शतभिषा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो स्त्री स्नान न करे। यदि भ्रम से स्नान करें तो पुष्प चन्दन से अपने स्वामी की पूजा करे।

अथ पुंसां नूतनवस्त्रधारणमुहूर्त्तः—

ब्रह्मानुराधवसुपुष्यविशाखहस्तचित्रोत्तराश्विपवनादितिरेवतीषु ।
जन्मर्क्षजीवबुधशुक्रदिनोत्सवादौ धार्यं नवं वसनमीश्वरविप्रतुष्टयै ॥

रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, हस्त, चित्रा, तीनों उत्तरा, अश्विनी, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती और जन्म के नक्षत्र, इन नक्षत्रों में बृहस्पति, बुध और शुक, दिनों में तथा यज्ञादि उत्सव कार्य में राजा और ब्राह्मण के प्रसन्नार्थ पुरुष नवीन वस्त्र धारण करें।

अथ स्त्रीणां नूतनवस्त्रधारणम्—

धनिष्ठा रेवती चैव तथा हस्तादिपञ्चकम् ।
अश्विनी गुरुशुक्राणां स्त्रीणां वस्त्रस्य धारणम् ॥

धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा और अश्विनी नक्षत्रों में बृहस्पति और शुक्र दिन में स्त्री के लिये नूतन वस्त्रधारण करना श्रेष्ठ है।

अथ स्त्रीणां भूषणधारणे विशेषः—

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च मार्त्तण्डभौमगुरुदानवमन्त्रिवारे ।
लाक्षासुवर्णमणिविद्रुमशंखदन्तरक्ताम्बराणि बिभृयात् प्रमदागणश्च ॥

अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों में, सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति, शुक्र वारों में स्त्रियों के लिये लाक्षाभरण (लाह की चूड़ी), सुवर्ण की चूड़ी वगैरह मणि (रत्न जड़ित भूषण), मूङ्गा, शंख-चूड़ी, लाल वस्त्र आदि धारण करना शुभ है।

अथ सूचीकर्म—

चित्रादित्यश्विनीमैत्रश्रविष्ठासु शुभे दिने ।
सूचीकर्मविधानं च शुभं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनी, अनुराधा और श्रवण इन नक्षत्रों में, शुभ दिनों में सूचीकर्म करना या सीखना विद्वानों ने शुभ बतलाया है।

अथ वस्त्रक्षालनम्—

शनिभौमदिने श्राद्धे कुहू षष्ठी निरंशके ।
वस्त्राणां क्षारसंयोगो दहत्यासप्तमं कुलम् ॥

शनि, मंगल और माता-पिता के श्राद्ध दिन अमावास्या, षष्ठी और नवमी तिथियों में वस्त्र धुलवाना वर्जित है। धुलवाने से सात पुरुष तक पितृगणों को दग्ध करता है।

अथ तैलाभ्यङ्गविचारः—

रवौ गुरौ भृगौ भौमे षष्ठ्यां संक्रान्तिवासरे ।
चित्रावैष्णवहस्तेषु तैलाभ्यङ्गं न कारयेत् ॥

रवि, बृहस्पति, शुक्र तथा कुजवार में, रविसंक्रान्ति के दिन में, और चित्रा, श्रवण में तथा हस्त नक्षत्रों में तैल लगाना मना है ।

अथ दोषपरिहारः—

रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वां मृत्तिकां कुजवासरे ।
भार्गवे गोमयं दत्त्वा तैलदोषस्य शान्तये ॥

रवि को पुष्प, बृहस्पति को दूर्वा, मङ्गल को मिट्टी और शुक्र को गोमय (गोबर) दोष निवारण के लिये तैल में डालकर लगाना चाहिये ।

अथ तैलविचारः—

सार्षपं सघृतं वापि यत्तैलं पुष्पवासितम् ।
अदुष्टं पक्वतैलं च स्नानाभ्यङ्गे च नित्यशः ॥

सरसों का तैल, घृत मिला हुआ तैल, सुगन्धियुक्त तैल (गुलरोगन, चमेली, आँवला इत्यादि) और पकाया हुआ तैल, नित्य स्नान के लिये वर्जित नहीं है ।

अथ कृषिप्रकरणम्, तत्रादौ हलप्रवहणम्—

सप्तम्येकादशी चैव पञ्चमी दशमी तथा ।
त्रयोदशी तृतीया च प्रशस्ता हलकर्मणि ॥
मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषु भेषु ।
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ॥
विष्कम्भवज्रव्यतिपातगण्डातिगण्डमन्दारदिनं विहाय ।
सम्पूज्य दूर्वाक्षतगन्धपुष्पैर्हलं विदध्यात् कृषिकर्मकर्त्ता ॥

सप्तमी, एकादशी, पञ्चमी, त्रयोदशी और तृतीया ये तिथियाँ हलकर्म में श्रेष्ठ हैं, एवं मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर संज्ञक, मूल, मघा और विशाखा इन नक्षत्रों में नीरोग बैल से प्रथम वार हल चलवाना शुभ है । विष्कुम्भ, वज्र, व्यतिपात, गण्ड और अतिगण्ड योग, शनि और मङ्गल को छोड़कर शेष दिनों में दूर्वाक्षत, पुष्प और चन्दन से पूजन करके हल चलवाना श्रेष्ठ कहा गया है ।

अथ बीजवपनम्—

हस्तपौष्णाश्विसौम्याश्च पुष्यमैत्रानिलानलाः ।
रोहिणी च प्रशस्ताः स्युः सर्वबीजनिवापने ॥
ओजाश्च तिथयः श्रेष्ठाः पक्षयोरुभयोरपि ।
प्रथमां नवमीं युग्माममावास्यां च वर्ज्जयेत् ॥
द्वितीया दशमी षष्ठी मध्यमास्तिथयः परे ।
चन्द्रज्ञजीवशुक्राणां वारा वर्गादयः शुभाः ॥
हलप्रवाहवद् बीजवपनस्य विधिः स्मृतः ।
रोपणे सर्वसस्यानां कर्त्तने प्रथमेऽपि च ॥

हस्त, रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, पुष्य, अनुराधा, स्वाती, कृत्तिका और रोहिणी इन नक्षत्रों में एवं दोनों पक्षों (शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष) की विषम ३, ५, ६. आदि तिथियों में बीजवपन श्रेष्ठ है। प्रतिपदा, नवमी अमावास्या को छोड़ कर अन्य तिथि श्रेष्ठ तथा द्वितीया, दशमी, षष्ठी ये मध्यम हैं। सोम, बुध, बृहस्पति और शुक्र, दिनों में हलप्रवाहोक्त विधि से सब बीजों का बोना तथा रोपना (लगाना) और प्रथम २ काटना शुभ कहा गया है।

तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥

तीक्ष्ण संज्ञक, पूर्वाभाद्रपदा, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़ा, भरणी, चित्रा और पुष्य नक्षत्रों में एवं शनि, मङ्गल, दिन को छोड़ कर शेष दिनों में, रिक्ता तिथि वर्जित तिथियों में और स्थिरलग्न (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में धान्य का छेदन (खेत कटवाना) शुभ कहा गया है।

अथ कणमर्दनम्—

भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूल-
मैत्रान्त्यभेषु कथितं कणमर्दनं सत् ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरभाद्र, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा और रेवती इन नक्षत्रों में कण (बोझे का ढेर) का मर्दन शुभ है।

अथ मेधिस्थापनम्—

वटोदुम्बरनीपानां शाखोटवदरस्य च ।
शाल्मलेर्मुशलेनैव मेधिं कुर्याद्विचक्षणः ॥
कपित्थविल्ववंशानां मेधिर्नैव शुभावहा ।
न पौपे न च रिक्तायां न कुजार्किदिने तथा ॥
मृदुध्रुवचरर्क्षेषु खाते द्रव्यं नियुज्य च ।
सम्पूज्य धान्यं बद्ध्वाऽग्रे मेधिं संस्थापयेद् बुधः ॥

बड़, गूलर, कदम, साहोड़ा, वैर, और सेमर काष्ठों की मेधि (मेह) बनवानी चाहिये। खैर, वेल और बांस की मेधि शुभदायक नहीं होती है। पौष महीना, रिक्ता तिथि, मङ्गल और शनिवार को छोड़ कर मृदु, ध्रुव, चरसंज्ञक नक्षत्रों में खात में पुष्प द्रव्यादि देकर पूजन कर मेधिके अग्रमें धान्य बांधकर स्थापन करना शुभ है।

अथ धान्यस्थापनम्—

मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु कर्क्काजतौलिरहिते च तनौ शुभाहे ।
धान्यस्थितिः शुभकरी गदिता ध्रुवेज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषु च धान्यवृद्धिः ॥

मिश्र और उग्रसंज्ञक, आश्लेषा और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में, कर्क, मेष और तुला लग्नसे भिन्न लग्नों में शुभ दिनों में ध्रुवसंज्ञक, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्विनी, चरसंज्ञक नक्षत्रों में धान्य का स्थापन करना वृद्धिदायक है।

अथ बीजरक्षणम्—

रोहिणी रेवती मूलं स्वाती हस्तो मृगस्तथा ।
आषाढोत्तरयुक्ता च तथा भाद्रपदा मघा ॥
शस्तानि सर्वधान्यानां शुभे वारे स्थिरोदये ।
गर्गादिमुनिभिः प्रोक्ताः प्रशस्ता बीजरक्षणे ॥

रोहिणी, रेवती, मूल, स्वाती, हस्त, मृगशिरा, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्र, और मघा नक्षत्रों में, शुभदिन तथा स्थिरलग्नों में सब बीजों का स्थापन करना (बीज रखना) गर्गादिमुनियोंने शुभ कहा है।

अथ धान्यनिष्कासनम्

उत्तराम्बुपविशाखवासवे चन्द्रभौमगुरुशुक्रवासरे ।

गेहतो बहुतरायवृद्धये धान्यनिष्क्रमणमाह पण्डितः ॥

तीनों उत्तरा, शतभिषा, विशाखा और धनिष्ठा नक्षत्रों में, चन्द्र, कुज, बृहस्पति और शुक्रवारों में गृह से धान्य निकालना वृद्धि को देने वाला होता है। यह पण्डितों ने कहा है।

अथ धान्यप्रवेपणम्—

श्रवणात्त्रयं विशाखाध्रुवपूर्वपुनर्वसूनि ऋक्षाणि ।
पुष्याश्विन्यौ ज्येष्ठो धनधान्यविवृद्धये कथिता ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ध्रुवसंज्ञक, तीनों पूर्वा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी और ज्येष्ठा नक्षत्र धान्य-वृद्धि (व्याज पर धान्य लगाने) के लिये शुभ कहे गये हैं।

अथ नवान्नभक्षणम्—

वृश्चिके पूर्वभागे तु माघे वापि च फाल्गुने ।
सत्तिथौ शुक्लपक्षे च पञ्चम्यन्ते सितेतरे ॥
मृदुक्षिप्रचरर्क्षेषु सत्तनौ सत्क्षणेषु च ।
हुत्वा वह्नौ विधानेन नवान्नं भक्षयेत्सुधीः ॥

वृश्चिक के पूर्वार्द्ध (१२ अंश) में तथा माघ और फाल्गुन में शुभ तिथि में शुक्लपक्ष में कृष्णपक्ष के पञ्चमी पर्यन्त, मृदु, क्षिप्र और चरसंज्ञक नक्षत्रों में शुभ लग्न तथा शुभ मुहूर्त्त में विधिपूर्वक अग्नि में हवन करके विद्वानों ने नवान्न-भक्षण श्रेष्ठ कहा है।

अथ नवान्नभक्षणे विशेषः—

तुलाचापद्विदैवार्क्षं चैत्रं नन्दां त्रयोदशीम् ।
जन्मर्क्षं शयनं विष्णोः शनिशुक्रकुजान् विना ॥

तुला और धनु सङ्क्रान्ति, विशाखा नक्षत्र चैत्र मास, प्रतिपदा, षष्ठी एकादशी तथा त्रयोदशी तिथि, जन्म-नक्षत्र, हरिशयन (अर्थात् देवोत्थान से पहले), शनि, शुक्र, मङ्गल इन सबों को छोड़ कर नवान्न भक्षण करना शुभ है।

अथ वह्निवासः—

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

तिथि में एक जोड़कर उसमें रव्यादि से दिन जोड़ दें और चार से भाग देने

पर यदि तीन और शून्य शेष बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना चाहिये, उसमें हवन करे तो सौख्य होता है। एक और दो शेष बचे तो अग्नि का वास आकाश या पाताल में जानना चाहिये, उसमें यदि हवन करें तो प्राण और अर्थ (धन) का नाश होता है। तिथि की गणना प्रायः तिथिकार्य में शुक्ल पक्ष से ही होती है। जैसा कि लिखा है—

(शुक्लादिगणना कार्या तिथीनां गणिते सदा) इत्यादि ।

उदाहरण—

जैसे कार्त्तिक शुक्ल पञ्चमी बृहस्पति को हवन करना अभीष्ट है। तिथि ५, वार ५, दोनों को मिलाया तो १० हुआ, और योग में १ जोड़ दिया ११ हुआ इसमें चार के भाग देने से लब्धि ३, इस कारण अग्नि का वास पृथ्वी पर हुआ, इसमें हवन करने से सौख्य और लाभ होगा। यह विचार काम्यहवन के लिये है। यज्ञादि हवन में इसका विचार नहीं होता।

अथ भैषज्यनिर्माणम्—

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ।
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥

रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल और मृगशिरा नक्षत्रों में औषधि बनाना शुभ है।

वारा निगदिताः शस्ता भैषज्यस्य च कर्म्मणि ।
सुरेज्यभार्गवादित्यचन्द्रा नित्यं बुधैः सदा ॥

बृहस्पति, शुक्र, रवि और सोम दिनों में भैषज्य (औषध) सेवन प्रशस्त कहा गया है।

हस्तादितिश्रवणसोमसमीरणेषु मूलानलेन्द्रवसुतिष्ययुतेषु भेषु ।
भैषज्यपानमचिरादपहृत्य रोगं कन्दर्पतुल्यवपुषं पुरुषं करोति ॥

हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मूल, कृत्तिका, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और पुष्य नक्षत्रों में औषध का पान करने से बहुत दिन का भी रोग शीघ्र नाश होकर थोड़े ही दिनों में मनुष्य का शरीर कामदेव के समान सुन्दर होता है।

अथ रोगविमुक्तस्नानम्—

आर्द्रातिष्यविशाखशक्रदहने मूलानुराधाश्विनी-
पूर्वाषाढहरित्रये मिगदितं चन्द्रो विहीनः शुभः ।

सूर्यारार्किदिने गुरौ शुभकरे केन्द्रे च पापान्विते
रिक्तायां च तिथौ सविष्टिकरणे स्नानं हितं रोगिणाम् ॥

आर्द्रा, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, मूल, अनुराधा, अश्विनी, पूर्वाषाढ, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिशा नक्षत्रों में, कृष्ण पक्ष में, रवि, मङ्गल, शनि और बृहस्पति दिनों में पाप ग्रह केन्द्र में हों, रिक्ता (४, ९, १४) तिथि में, भद्रा करण में रोगियों के लिये स्नान करना हितकर कहा गया है।

अथ गृहप्रकरणम्। तत्रादौ गृहनिर्माणे मासशुद्धिः—

चैत्रे शोककरं गृहादिरचितं स्यान्माधवेऽर्थप्रदं
ज्येष्ठे मृत्युकरं शुचौ पशुहरं तद्वृद्धिदं श्रावणे।
शून्यं भाद्रपदे त्विषे कलिकरं भृत्यक्षयं कार्त्तिके
धान्यं मार्गसहस्ययोर्दहनभीर्माघे श्रियः फाल्गुने ॥

चैत्रादि मास में गृहारम्भ का फल कहा गया है। जैसे चैत्र में शोक, वैशाख में धनलाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ में पशुनाश, श्रावण में पशुवृद्धि, भाद्रपद में शून्य (दारिद्रय), आश्विन में कलह, कार्त्तिक में भृत्यक्षय (नौकरों की हानि), अग्रहण और पूस में धन और धान्य की वृद्धि, माघ में अग्निभय और फाल्गुन में लक्ष्मीप्राप्ति होती है।

अथ तिथिपक्षशुद्धिः—

दारिद्र्यं प्रतिपत् कुर्यात् चतुर्थी धनहारिणी।
अष्टम्युच्चाटनं चैव नवमी शस्त्रघातिनी ॥
अमायां राजभीतिश्च चतुर्दश्यां स्त्रियः क्षयः।
शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम् ॥

गृहारम्भ में प्रतिपद् दारिद्रय करने वाली, चतुर्थी धननाश करने वाली, अष्टमी उचाटनदायिनी, नवमी घातकारिणी, अमावास्या राजभयदात्री और चतुर्दशी स्त्रीविनाशिनी होती है। शेष तिथि गृहारम्भ में शुभ है। शुक्लपक्ष में गृहारम्भ करने से सौख्य और कृष्णपक्ष में चौरभय होता है।

अथ गृहारम्भे नक्षत्रदिनादिशुद्धिः—

हस्तादित्यशशाङ्कपुष्यपवनप्राज्येशमित्रोत्तरा-
चित्राश्विश्रवणेषु वृश्चिकघटौ त्यक्त्वा विरिक्ते तिथौ।

शुक्राचार्यशनैश्चरज्ञशशिनो वारेऽनुकूले विधौ
सद्भिर्वेश्मनि सूतिका गृहविधिः क्षेमङ्करः कीर्त्यते ॥

हस्त, पुनर्वसु, मृगशिरा, पुष्य, स्वाती, ज्येष्ठा, अनुराधा तीनों उत्तरा, चित्रा, अश्विनी, और श्रवण इन नक्षत्रों में, वृश्चिक, कुम्भ लग्न को छोड़ शेष लग्न में, रिक्ता वर्जित तिथि में, शुक्र, शनि, बुध और सोम दिन में अनुकूल चन्द्रमा रहने से अर्थात् चन्द्रमा सम्मुख, दक्षिण हो तो सूतिका आदि के लिये गृह बनवाना पण्डितों ने शुभ कहा है ।

अथ गृहप्रवेशे मासाः—

माघेऽर्थलाभः प्रथमे प्रवेशे पुत्रार्थलाभः खलु फाल्गुने च ।
चैत्रेऽर्थहानिर्धनधान्यलाभो वैशाखमासे पशुपुत्रलाभः ॥
ज्येष्ठे च मासेषु परेषु नूनं हानिप्रदः शत्रुभयप्रदश्च ॥

गृहप्रवेश में माघ धनलाभकारक, फाल्गुन पुत्र और धन-लाभ-कारक, चैत्र में धन की हानि, वैशाख में धनधान्य का लाभ और ज्येष्ठ मासमें पशु पुत्र का लाभ, इनसे भिन्न मासों में शत्रुभय तथा हानि होती है ।

अथ गृहप्रवेशमुहूर्त्तः—

गृहारम्भोदितैर्मासैर्धिष्ण्ये वारे विशेद् गृहम् ।
विशेत्सौम्यायने हर्म्यं तृणागारं तु सर्वदा ॥

गृहारम्भ में कहे हुए मास, दिन, पक्ष, तिथि और नक्षत्रों में, सौम्यायन में गृह प्रवेश शुभ है । तृण के घरमें यह विचार नहीं है । सदैव प्रवेश करना चाहिये ।

अथ दीक्षाग्रहणम्—

मासेष्वाश्विनगे हि षट्सु पुरतः स्यात् श्रावणे माधवे
भद्रापूर्णत्रयोदशी शुभतिथौ, शुक्रेन्दुजेन्दौ गुरौ ।
रोहिण्युत्तरशाक्रशङ्करमरुत्पुष्यद्विदेवाश्विनी-
विष्णुश्चन्द्रबले सुलग्नसमये दीक्षाविधिः शोभनः ॥

आश्विन, कार्त्तिक, अग्रहण, पूस, माघ, फाल्गुन, श्रावण और वैशाख, इन महीनों में भद्रा, पूर्णा, त्रयोदशी, आदि शुभ तिथि में, शुक्र, बुध, चन्द्र और बृहस्पति दिन में, रोहिणी, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, स्वाती, पुष्य, विशाखा, अश्विनी और श्रवण नक्षत्रों में, चन्द्रबल से युक्त होकर, शुभ लग्नों में मन्त्र-ग्रहण करना शुभ कहा गया है ।

अथ अग्न्याधानम्—

रेवत्युत्तररोहिणीगुरुविधुज्येष्ठाविशाखाग्निभे
जीवे शीतकरे कुजेऽथ तरणौ केन्द्रे त्रिकोणेऽथ वा।
पापे चोपचये स्थिते शुभतिथौ लग्ने विधौ शोभने
कुर्यादग्निपरिग्रहं सुरगुरौ पुष्टे शुभे रात्रिपे॥

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, ज्येष्ठा, विशाखा और कृत्तिका नक्षत्र में बृहस्पति, चन्द्रमा, मङ्गल, सूर्य ये ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हों, पापग्रह उपचय (३. ६. १० ११.) में प्राप्त हों, शुभ तिथि तथा लग्न में शुक्ल पक्ष में बृहस्पति और चन्द्रमा बली हों तो अग्निपरिग्रह (अग्न्याधान) शुभ है।

अथ राज्याभिषेकः—

राज्याभिषेकः शुभ उत्तरायणे गुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः।
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नो चैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे।
रिक्तास्वमायां बुधभौमवारे वर्ज्येषु वारेषु दिनेषु चैव।
खले दिने ऋक्षनिशेशयोश्च न नैधने से त्वभिषेक इष्टः॥

उत्तरायण में बृहस्पति, चन्द्रमा, शुक्र ये ग्रह उदित और बली होकर शुभराशि में हों तथा मङ्गल, रवि, जन्मराशिस्वामी, जन्मलग्नेश और दशेश उदित और बली होकर शुभ राशिमें हों, चैत्रमास, रिक्तातिथि, भौमवार, रात्रि और अधिकमास को छोड़ कर राज्याभिषेक शुभ होता है।

रिक्ता, अमावास्या तिथि, बुधवार, भौम वार को छोड़ कर शेष दिनों में लग्नेश बली होवें, चन्द्रबल हो और अष्टम भवन शुद्ध रहे तो राज्याभिषेक शुभ है।

अन्यच—उत्तरात्रयमैत्रेन्द्रधातृचन्द्रकरोडुपु।
सश्रुत्यश्वीज्यपौष्णेषु कुर्याद्राज्याभिषेचनम्॥

तीनों उत्तरा, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, श्रवण, अश्विनी, पुष्य और रेवती, नक्षत्रों में राज्याभिषेक शुभ कहा गया है।

अथ पुष्करण्यादिखननम्—

वैशाखे श्रावणे माघे फाल्गुने मार्गकार्त्तिके।
पौषे ज्येष्ठे भवेत्सिद्ध्यै वाप्याः कूपतडागयोः॥
एकादशी द्वितीया च तृतीया पञ्चमी।

प्रतिपद्दशमी श्रेष्ठा पूर्णिमा च त्रयोदशी ॥
एतास्सितदले चैव भार्गवेन्द्विज्यवासरे।
दशमस्थे भृगोः पुत्रे जलखातः प्रशस्यते ॥
मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु लग्ने झषे घटे वा मकराभिधे च।
आप्ये विधौ सर्वजलाशयानां सदा समारम्भमुशन्ति सन्तः ॥

वैशाख, श्रावण, माघ, फाल्गुन, अगहन, कार्तिक, पूस, और ज्येष्ठ इन महीनों में वापी (बावली), कूप, तडाग (पोखरा) आदि खनवाना शुभ कहा गया है। शुक्ल पक्ष की एकादशी, द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, प्रतिपदा, दशमी, पूर्णिमा और त्रयोदशी तिथियों में तथा शुक्र, चन्द्र, और गुरु दिनों में, दशम लग्न में शुक्र हों तो जलाशय खनवाना, उसकी प्रतिष्ठा आदि सब कार्य शुभ है। मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर संज्ञक नक्षत्रों में मीन, कुम्भ और मकर लग्न में और चन्द्रमा जलचर राशि में स्थित हों तो सभी जलाशयों का आरम्भ करना आचार्यों ने शुभ कहा है।

अथ जलाशयादिप्रतिष्ठा—

मार्त्तण्डेन्दूडुशुद्धौ मुरजिदशयने माघषट्कस्य शुक्ले
मूलाषाढोत्तराश्विश्रवणगुरुकरै पौष्णशक्राजचान्द्रे।
मैत्रे ब्राह्मे च पूर्णामदनरवितिथौ सद्वितीयातृतीये
कार्या तोयप्रतिष्ठा ज्ञगुरुसितदिने कालशुद्धे सुलग्ने ॥

सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र के शुद्ध रहनेपर उत्तरायण में माघ आदि छः महीनों के शुक्लपक्ष में, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तरा ३, अश्विनी, श्रवण, पुष्य, हस्त, रेवती, पूर्वभाद्र, मृगशिरा, अनुराधा और रोहिणी नक्षत्र में, पूर्णा, त्रयोदशी, द्वादशी, द्वितीया, तृतीया तिथियों में, बुध, गुरु, शुक्र वारों में, शुभ लग्न और शुभ मुहूर्त्त में जलाशय आदि की प्रतिष्ठा शुभ है।

अथ देवादिप्रतिष्ठा—

प्राजेशशक्रहरिहस्तसमीरणेषु मूलेन्दुमैत्रगुरुपौष्णशिवोत्तरेषु।
शस्ते दिने शुभतिथौ शशिनिप्रवृद्धौ धन्यां वदन्ति निखिलां शुभदां प्रतिष्ठाम् ॥

रोहिणी, ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, स्वाती, मूल, मृगशिरा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, आर्द्रा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में, शुक्लपक्ष के शुभदिन और शुभ तिथियों में सब देवताओं की प्रतिष्ठा शुभदायक है।

अत्राऽत्र विशेषः—

गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलं राज्याभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायने स्यात् ।
नो वा बाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्याद्
न्यूने मासेऽधिके वा नहि च सुरगुरौ सिंहनक्रस्थिते वा ॥

देवताओं की और जलाशयों की प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, गृहप्रवेश, मुण्डन, राज्याभिषेक, उपनयन (यज्ञोपवीत) इत्यादि याम्यायन में वर्जित है। और गुरु, शुक्र के बाल्य, वृद्ध, अस्त रहने पर तथा केतूदय में, क्षयमास, मलमास, वृहस्पति सिंह या मकर राशिगत हों तो उक्त शुभ कार्यों को करना मना है।

अथ सामान्ययात्रा—

सार्पार्द्रोत्तरकृत्तिकायममघास्त्याज्या विशाखायुताः
शस्ताः पुष्यकरादितीन्दुतुरगा मित्रत्रयं रेवती ।
भान्यन्यानि च मध्यमानि गमने षष्ठीयुतां द्वादशीं
रिक्तां पर्व च वर्जयेज्झषतुलास्त्रीमन्मथाः शोभनाः ॥

आश्लेषा, आर्द्रा, तीनों उत्तरा, कृत्तिका, भरणी, मघा और विशाखा ये नक्षत्र यात्रा में वर्जित हैं। पुष्य, हस्त, पुनर्वसु; मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती ये नक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ हैं और शेष नक्षत्र यात्रा में मध्यम हैं। षष्ठी, द्वादशी, रिक्ता और पर्व (अमावास्या, अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, सूर्य की सङ्क्रान्ति) इन तिथियों को छोड़ कर शेष तिथि में, मीन, तुला, कन्या और मिथुन इन लग्नों में यात्रा करना शुभ है।

अथ युद्धयात्रा—

एको ज्ञेज्यसितेषु पञ्चमतपःकेन्द्रेषु योगस्तथा
द्वौ चेत्तेष्वधियोग एषु सकला योगाधियोगः स्मृतः ।
योगे क्षेममथाधियोगगमने क्षेमं रिपूणां वधं
चाथो क्षेमयशोऽवनीश्च लभते योगाधियोगे व्रजन् ॥

बुध, बृहस्पति, शुक्र इन में से कोई एक ग्रह पञ्चम, नवम या केन्द्र में हो तो योग होता है और यदि दो ग्रह हों तो अधियोग होता है और यदि तीनों ग्रह होवें तो योगाधियोग कहलाता है। योग में यात्रा करने से कल्याण, अधियोग में शत्रुओं का नाश तथा कल्याण, और योगाधियोग में जाने से कल्याण, शत्रुओं का नाश, और यश भी प्राप्त होता है।

अथ यात्रायां सर्वदिग्गमननक्षत्राणि—

पुष्याश्विहस्तमैत्राणि पौष्णवैष्णवसौम्यभम् ।
वासवं सर्वदिक्ष्वाशु यात्रायां शोभनानि हि ॥

पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, रेवती, श्रवण, मृगशिरा, धनिष्ठा इन नक्षत्रों में सभी दिशाओं की यात्रा शुभ है ।

अथ युद्धयात्रायां विशेषः—

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः ।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुलो ज्ञो,
मूलाम्बुपेशविधिभं दश षड् द्वितिथ्यः ॥
पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौ कुलसञ्ज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः ।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले
सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतोः ॥

स्वाती, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, ध्रुव-संज्ञक नक्षत्र और विषम तिथि जैसे—१. ३. ५. ७. ९. ११. इत्यादि और रवि, सोम, शनि, बृहस्पति ये दिन 'अकुल' सञ्ज्ञक हैं। बुधवार, मूल, शतभिषा, आर्द्रा; अभिजित् ये नक्षत्र, दशमी, षष्ठी, द्वितीया तिथि 'कुलाकुल' सञ्ज्ञक हैं। तीनों पूर्वा, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा, चित्रा, ये नक्षत्र, शुक्र और मङ्गल दिन, द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी और चतुर्थी ये सब, 'कुल' सञ्ज्ञक हैं। 'अकुल' संज्ञक में मुकदमा दायर करने से यायी (मुद्दई) की ही जय होती हैं। 'कुल' सञ्ज्ञक में स्थायी (मुद्दालह) की जय होती है। इसी प्रकार, 'कुलाकुल' सञ्ज्ञक में दायर करने से दोनों में सन्धि होती है।

अथ क्षौरमुहूर्त्तः—

दन्तक्षौरनखक्रियाऽत्र विहिता चौलोदिते वारभे,
पातङ्ग्यारखीन्विहाय नवमं घस्रं च सन्ध्यां तथा ।
रिक्तां पर्व निशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्नहि पुनः कार्या हितप्रेप्सुभिः ॥

चौल कर्म में कहे हुए वार तथा नक्षत्र में, शनि, मङ्गल, रवि इन दिनों को

छोड़कर शेष दिनों में क्षौर कराना शुभ है। और नवें दिन में, सन्ध्याकाल, रिक्तातिथि, पर्वदिन, रात्रि में, आसनरहित होकर, युद्ध में जाने के समय, या यात्रा के समय, स्नान के बाद, भोजन करके, तेल लगाकर, अपने कल्याण को चाहने वाले पुरुष क्षौर न करें।

अथ द्विरागमनानन्तरयात्रा—

याते द्विरागमे पत्न्याः पुनः पतिगृहे गमः।
पितृगेहस्थितायाश्च स व्यङ्ग इह कथ्यते॥
यथा भृगुर्दक्षिणसम्मुखस्थो मृगीदृशीनामशुभो गमे सदा।
तथैव राहुः परिकल्पनीयो, व्यङ्गे न कार्यो भृगुजाद्विलोमम्॥
वैधव्यमग्रतो राहुर्दक्षिणे सुतहा भवेत्।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं तृतीयगमने स्त्रियः॥
त्रैमासिकं गृहादौ च युद्धे यामार्द्धसम्भवं।
राहुं विचार्य दैवज्ञो मासिकं व्यङ्गकर्मणि॥

द्विरागमन में पतिगृह में गई हुई कन्या को पुनः पिता के गृह से स्वामी के घर जाना द्व्यङ्ग कहलाता है। जिस प्रकार द्विरागमन में दक्षिण और सम्मुख शुक्र रहने से अशुभदायक होता है, उसी तरह द्व्यङ्ग में राहु को भी जानना चाहिये। सम्मुख राहु में जाने से विधवा और दक्षिण राहु में जाने से पुत्र की हानि कही गई है। और वाम तथा पृष्ठ की तरफ राहु के रहने से यात्रा शुभ है, यह विचार स्त्री के तृतीयवार की यात्रा में करना चाहिये। त्रैमासिक राहु गृह कार्य में और युद्धयात्रा में अर्द्धप्रहरात्मक एवं द्व्यङ्ग कार्य में मासिक राहु का विचार पण्डितों ने लिखा है।

अथ द्व्यङ्गमुहूर्त्तः—

मेषोक्षयुग्मकर्केषु सत्रिकोणेषु तिष्ठति।
राहुः पूर्वादिकाष्ठासु नेष्टः सम्मुखदक्षिणे॥
सुतिथौ गुणवल्लग्ने राहौ वामे च पृष्ठगे।
यात्रोक्तमासदिवसे यायात्पतिनिकेतनम्॥
आदित्यमृगहस्तेज्यपौष्णमैत्राश्विनीषु च।
गोविन्दवसुमूलेषु व्यङ्गः सम्पत्प्रदायकः॥

मेष, वृष, मिथुन और कर्क इन राशियों में और इनसे नवम तथा पञ्चम

राशि में राहु पूर्वादि दिशा में वास करता है । शुभ तिथि में तथा शुभ लग्न में राहु के वाम या पृष्ठ रहने पर यात्रा में कहे हुए मास, दिन, तिथि आदि विहित काल में तृतीयवार स्वामी के घर जाना स्त्रियों के लिए शुभप्रद है । पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, पुष्य, रेवती, अनुराधा, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा और मूल इन नक्षत्रों में तृतीयवार यात्रा स्त्रियों के लिए सम्पत्तिदायक है ।

अथ स्वामिदर्शनमुहूर्त्तः—

आर्द्रा श्लेषा तथा ज्येष्ठा कृत्तिका भरणी तथा ।
त्रिपूर्वाश्च विनाशाय दर्शने स्वामिनः शुभाः ॥
भृत्यानुकूलनक्षत्रे शुभांशे शशिनि स्थिते ।
विष्टिरिक्ताविवर्ज्येषु तिथिषु प्रेक्षणं शुभम् ॥

आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, भरणी और तीनों पूर्वा ये नक्षत्र स्वामी के दर्शन में विनाशकारक होते हैं । इससे अन्य नक्षत्रों में स्वामी का दर्शन शुभ कहा गया है । नौकरों के अनुकूल नक्षत्र में चन्द्रमा शुभ ग्रह के नवांश में स्थित होवें तथा भद्रा और रिक्ता वर्जित तिथियों में स्वामियों का दर्शन शुभ कहा गया है ।

अथ दत्तकग्रहणमुहूर्त्तः—

हस्तादिपञ्चकभिषग्वसुपुष्यभेषु सूर्यक्ष्माजगुरुभार्गववासरेषु ।
रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्ने सिंहे वृषे भवति दत्तपरिग्रहोऽयम् ॥

हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा और पुष्य इन नक्षत्रों में, रवि, मङ्गल, बृहस्पति और शुक्र इन दिनों में, रिक्ता से रहित तिथियों में, वृश्चिक, कुम्भ, सिंह और वृष लग्नों में दत्तक (गोद) ग्रहण करना श्रेष्ठ है ।

अथ ऋणग्रहणमुहूर्त्तः—

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ।
नारे ग्राह्यमृणं तु सङ्क्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽहि य-
त्तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसञ्ज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी और चरसंज्ञक इन नक्षत्रों में पांचवां, आठवां और नवां लग्न शुद्ध रहे तो द्रव्य-प्रयोग करना शुभ है । मङ्गल के दिन में, सङ्क्रान्ति दिन में, वृद्धि योग में,

हस्त नक्षत्र में, रविवार को ऋण ग्रहण न करे। इन मुहूर्त्तों में जो ऋण ग्रहण करता है वह सदैव ऋणी रहता है और बुधवार को कदापि नहीं धन देना चाहिए।

अथ ऋणोद्धारः—

ऋणं भौमे न गृह्णीयान्न देयं बुधवासरे।
ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् सञ्चयं सोमनन्दने॥

मङ्गल को ऋण नहीं लेना चाहिये और बुध को देना नहीं चाहिये। इसी प्रकार मङ्गल को ऋणोद्धार करना शुभ है और बुध को ऋण ग्रहण करना भी शुभ है।

अथ वृक्षलताराजदर्शनगोक्रयविक्रयमुहूर्त्ताः—

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोऽथो नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः।
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषु मद्यमुदितं क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभा-
दित्येन्द्राम्बुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः॥

विशाखा, मूल, मृदु सञ्ज्ञक तथा ध्रुव सञ्ज्ञक, शतभिषा इन नक्षत्रों में लता तथा वृक्ष का लगाना शुभ है। ध्रुव, मृदु, क्षिप्रसञ्ज्ञक, श्रवण और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में राजाओं का दर्शन करना शुभ है। तीक्ष्ण, उग्रसञ्ज्ञक शतभिषा इन नक्षत्रों में मद्यक्रिया शुभ है। क्षिप्रसञ्ज्ञक, रेवती, विशाखा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और शतभिषा, इन नक्षत्रों में गौओं का खरीदना और वेचना शुभ है।

अथ विक्रयविपण्योर्मुहूर्त्तः—

पूर्वाद्वीशकृशानुसापयमभे केन्द्रत्रिकोणे शुभैः
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विना घटतनुं सद्विक्रयः सत्तिथौ।
रिक्तभौमघटान्विना च विपणिर्मित्रध्रुवक्षिप्रभै-
र्लग्ने चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितैः पापैः शुभैर्द्व्यायखे॥

तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, आश्लेषा और भरणी इन नक्षत्रों में, शुभ ग्रह केन्द्र में हों, पापग्रह छठे, तीसरे और ग्यारहवें होवें तो, कुम्भ लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में, शुभ तिथि में विक्रय करना (वेचना) शुभ है। रिक्ता तिथि को छोड़कर शेष तिथि में, मङ्गलवार को छोड़ कर शेष दिनों में, कुम्भ लग्न को त्याग कर शेष लग्नों में, मित्र, ध्रुव, क्षिप्रसञ्ज्ञक नक्षत्रों में, शुक्र या चन्द्रमा लग्न में हो, आठवें, बारहवें स्थान में पापग्रह न हों, शुभग्रह दूसरे ग्यारहवें, दसवें हों तो विपणि (हाट लगाना) शुभ है।

अथ अश्वहस्तिकार्यमुहूर्त्तः—

क्षिप्रान्त्यवस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिने प्रशस्तम् ।
स्याद्वाजिकृत्यं त्वथ हस्तिकार्यं कुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषु विद्वान् ॥

क्षिप्रसञ्ज्ञक, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाती, शतभिषा और पुनर्वसु इन नक्षत्रों में, रिक्तावर्जित तिथि तथा शुभदिनों में घोड़े का खरीदना, वेचना तथा सवारी आदि करना शुभ है । मृदु-क्षिप्र-चर संज्ञक नक्षत्र में गज (हाथी) का खरीदना-वेचना या सवारी करना आदि सभी कार्य शुभ होता है ।

अथ भूषाशस्त्रघटनमुहूर्त्तः—

स्याद्भूषाघटनं त्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवे रत्नयुक्
तत्तीक्ष्णोग्रविहीनभे रविकुजौ मेषालिसिंहे तनौ ।
तन्मुक्तासहितं चरध्रुवमृदुक्षिप्रे शुभे सत्तनौ
तीक्ष्णोग्राश्विमृगद्विदेवदहने शस्त्रं शुभं घट्टितम् ॥

त्रिपुष्कर योग में, चर, क्षिप्र, ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में भूषण का बनवाना शुभ है । और तीक्ष्ण, उग्रसंज्ञक नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में, रवि तथा मङ्गल दिन में, मेष, सिंह और वृश्चिक लग्न में रत्न से मिले हुए (जड़ाऊदार) भूषण का बनवाना शुभ है । और चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्रसंज्ञक नक्षत्रों में मुक्ता (मोती) सहित भूषण का बनवाना शुभ है । और शुभ लग्न में तीक्ष्ण–उग्रसंज्ञक, अश्विनी, मृगशिरा, विशाखा और कृत्तिका इन नक्षत्रों में शस्त्र का बनवाना शुभ है ।

अथ मुद्रापातन (स्थापन) मुहूर्त्तः—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शनिचन्द्रवर्ज्ये ।
वारे तिथौ पूर्णजयाख्ययोश्च मुद्रा प्रतिष्ठा शुभदा नराणाम् ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर सञ्ज्ञक नक्षत्रों में, शुभयोग, शनि, चन्द्र से रहित दिनों में तथा पूर्णा, जया तिथियों में मुद्रा (रुपया) आदि का स्थापन करना (रखना) शुभ है ।

अथ शस्त्रादिधारणमुहूर्त्तः—

पुष्ये चादितिचित्रपद्मतनये शक्रोत्तरारेवती-
वाजीहस्तविशाखमित्रसहिते भानौ गुरौ भार्गवे ।
कुम्भे कीटगृहे वृषे मृगपतौ चन्द्रे शुभैर्वीक्षिते
सन्नाहः शरखड्गकुन्तछुरिका धार्या नृपाणां हिताः ॥

पुष्य, पुनर्वसु, चित्रा, रोहिणी, ज्येष्ठा, उत्तरा, रेवती, अश्विनी, हस्त,

विशाखा, और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि, बृहस्पति, शुक्र वारों में तथा कुम्भ, कर्क, वृष, मकर लग्नों में, चन्द्रमा शुभ ग्रह से देखे जाते हों तो, बाण, तलवार, भाला, छुरिका आदिका धारण करना राजाओं के लिए शुभ होता है।

अथ खट्वा-पादुकाद्युपभोगमुहूर्तः—

मैत्रेन्दुपुष्ययमभादितिवाजिचित्राहस्तोत्तरात्रयहरीज्यविधातृभानि।
एतेष्वतीवशयनासनपादुकानां सम्भोगकार्यमुदितं मुनिभिः शुभाहे॥

मैत्रसञ्ज्ञक, पुष्य, भरणी, पुनर्वसु, अश्विनी, चित्रा, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अभिजित्, और रोहिणी, इन नक्षत्रों में, शुभ दिनों में शय्या, आसन, पादुका (खड़ाऊँ, जूते) आदिका भोग करना मुनियों ने अत्यन्त शुभ कहा है।

अथ अन्धादिसञ्ज्ञकानि नक्षत्राणि—

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षं रविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रं भवेत्।
मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वाष्ट्रैन्द्रविध्यन्तकं
स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगस्॥

धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढा, विशाखा, उत्तराफल्गुनी और रेवती ये नक्षत्र अन्धसञ्ज्ञक हैं। हस्त, उत्तराषाढा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी और मृगशिरा, ये नक्षत्र मन्दाक्ष सञ्ज्ञक हैं। आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित् तथा भरणी, ये नक्षत्र मध्याक्ष सञ्ज्ञक हैं। स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपदा, पूर्वाफल्गुनी, ये नक्षत्र स्वक्ष सञ्ज्ञक कहे गये हैं।

अथ अन्धादिसञ्ज्ञकनक्षत्राणां फलानि—

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः।
स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्तिर्न सुलोचने॥

अन्धसंज्ञक नक्षत्रों में गई हुई (खोई हुई) चीज शीघ्र मिल जाती है। मन्दाक्ष सञ्ज्ञक में यत्न (मिहनत) करने से मिलती है। मध्याक्षसञ्ज्ञक में दूर चली गयी यह श्रवण होता है। सुलोचन (स्वक्ष) संज्ञक में मिलना तो दूर रहे किन्तु श्रवण तक भी नहीं होता है।

अथ पञ्चके (भदवा) त्याज्यविषयः—

शय्यावितानं प्रेतादिक्रियां, काष्ठतृणार्जनम्।
याम्यदिग्गमनं कुर्यान्न चन्द्रे कुम्भमीनगे॥

जब चन्द्रमा कुम्भ और मीन राशि में हो अर्थात् पञ्चक (भदवा) हो तो

शय्या आदि का निर्माण (बनवाना) या भोग करना, प्रेत क्रिया संस्कार-श्राद्धादि, वृक्षच्छेदन, तृणच्छेदन आदि तथा सङ्ग्रह करना मना है और दक्षिण दिशामें यात्रा करना मना है। अथ शिल्पविद्यामुहूर्त्तः—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरे ज्ञे गुरौ वा खलग्नगे।
विधौ ज्ञजीववर्गस्थे शिल्पविद्या प्रशस्यते॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, और चर संज्ञक नक्षत्रों में बुध या गुरु दशम लग्न में हों, चन्द्रमा, बुध–गुरु के वर्ग (षड्वर्ग) में हो तो शिल्पविद्या का आरम्भ करना श्रेष्ठ होता है। अथ मैत्रीकरणमुहूर्त्तः—

सुरेज्यमित्रभाग्येषु चाष्टम्यां तैतिले हरौ।
शुक्रदृष्टे तनौ सौम्यवारे सन्धानमिष्यते॥

पुष्य, अनुराधा, पूर्वाफल्गुनी नक्षत्रों में, अष्टमी या द्वादशी तिथि में, तैतिल-करण में, शुभवारों में, शुक्र से लग्न देखा जाय तो मैत्री (दोस्ती) करना श्रेष्ठ है।

अथ शान्तिकपौष्टिकादिकृत्यमुहूर्त्तः—

क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासु शस्तं स्याच्छान्तिकञ्च सहपौष्टिकमङ्गलाभ्याम्।
खेऽर्के विधौ सुखगते तनुगे गुरौ नो मौढ्यादिदुष्टसमये शुभदं निमित्ते॥

क्षिप्र, ध्रुव और चर संज्ञक, रेवती, मघा नक्षत्रों में, सूर्य दसवें, चन्द्रमा चौथे, गुरु लग्न में स्थित हों गुरु-शुक्रास्तादि-बाल-वृद्धका समय नहीं हो तथा केतु आदि का उदय न हो तो पौष्टिक और मङ्गल कर्म के साथ विनायकादि शान्ति तथा अन्यान्य शान्ति करना शुभ कहा गया है।

अथ नौकाघटनमुहूर्त्तः—

याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे।
भृग्वीज्यार्कदिने नौकाघट्टनं सत्तनौ शुभम्॥

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, मघा तथा आर्द्रा इन नक्षत्रों को छोड़कर शेष नक्षत्रों में, शुक्र, बृहस्पति और रवि दिनों में नौका बनवाना शुभ है। अथ सर्वारम्भमुहूर्त्तः—

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति॥

बारहवें आठवें स्थान शुद्ध हों अर्थात् कोई ग्रह वहां न हो और उपचय (३-६-१०-११) लग्नों में शुभग्रह की दृष्टि हो, या युति हो, चन्द्रमा तीसरे, छठें, ग्यारहवें और दसवें हो तो सभी कार्यों का आरम्भ करना श्रेष्ठ है।

अथ कदलीरोपणे विशेषः—

श्रवणादीनि षड् भद्रां भाद्रसूर्यकुजार्कजान् ।
म्यन्त-श्यन्त-तिथीस्त्यक्त्वा कदलीरोपणं शुभम् ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र और रेवती नक्षत्रों को भाद्रमहीना और भद्रा को, रवि, मङ्गल, शनि दिनों को, म्यन्त जैसे (पञ्चमी, सप्तमी, दशमी इत्यादि) श्यन्त जैसे (एकादशी इत्यादि) तिथियों को छोड़कर शेष तिथि में कदली (केला) रोपण (लगाना) शुभ है ।

अथ महारुद्रादौ शिववासः—

तिथिं च द्विगुणीकृत्य बाणैः संयोजयेत्ततः ।
सप्तभिश्च हरेद्भागं शिववासं समुद्दिशेत् ॥
एकेन वासः कैलासे द्वितीये गौरिसन्निधौ ।
तृतीये वृषभारूढः सभायां च चतुष्टये ॥
पञ्चके भोजने चैव क्रीडायां षण्मिते तथा ।
श्मशाने सप्त शेषे च शिववास इतीरितः ॥
कैलासे लभते सौख्यं गौर्या च सुखसम्पदः ।
भोजने च भवेत्पीडा क्रीडायां कष्टमेव च ।
श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेवं विचारयेत् ॥

एते स्पष्टार्थाः । अथ शिववासे शुभतिथयः—

शुक्ल पक्षे = २–५–६–७–९–१२–१३–१४ ।
कृष्ण पक्षे = १–४–५–६–८–११–१२–३० ।

तिथि की गणना शुक्लपक्ष के प्रतिपद् से करना चाहिये ।

अथ सर्वार्थसिद्धियोगः—

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभम् ।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥

रविवार को हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य, अश्विनी । सोमवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा । मङ्गल को अश्विनी, उत्तरभाद्र, कृत्तिका, आश्लेषा । बुध को रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा । गुरुवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य । शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी,

पुनर्वसु, श्रवण। शनिवार को श्रवण, रोहिणी, स्वाती, ये नक्षत्र पूर्वाचार्यों ने सर्वार्थसिद्धि (सभी कार्य के लिये सिद्धिदायक) कहे हैं।

अथ नक्षत्राणां ध्रुवादिसंज्ञा तत्कृत्यं च—

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये॥

तीनों उत्तरा और रोहिणी नक्षत्र, रवि दिन यह 'ध्रुव' तथा 'स्थिर' संज्ञक हैं। इसमें बीजवपन, स्थिर कार्य, घर बनवाना, शान्ति क्रिया, आराम (पुष्प-वाटिका) आदि कार्य शुभदायक हैं।

अथ नक्षत्राणां चरादिसंज्ञा तत्कृत्यं च—

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि 'चरं' 'चलम्'।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम्॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, सोमवार 'चर' तथा 'चल' संज्ञक हैं। इनमें अश्व, गज आदि का आरोहण, वाटिका-गमन, यात्रा आदि शुभ कहे गये हैं।

अथ नक्षत्राणां उग्रादिसंज्ञा—

पूर्वात्रयं याम्यमघे 'उग्रं' 'क्रूरं' कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति॥

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, मङ्गल दिन 'उग्र' तथा 'क्रूर' सञ्ज्ञक हैं। इसमें घात (मारण), अग्नि-शठता विष-शस्त्र आदि के कार्य शुभ कहे गये हैं।

अथ नक्षत्राणां मिश्रादिसञ्ज्ञा—

विशाखाग्नेयभे सौम्यो 'मिश्रं' साधारणं' स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति॥

विशाखा और कृत्तिका नक्षत्र, बुध दिन 'मिश्र' तथा 'साधारण' सञ्ज्ञक हैं। इसमें अग्निकार्य, मिश्रकार्य वृषोत्सर्ग आदि सिद्ध कहा गया है।

अथ नक्षत्राणां लघ्वादिसंज्ञा—

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम्॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र, बृहस्पति, दिन, 'क्षिप्र' तथा 'लघु' सञ्ज्ञक हैं। इसमें पण्य (खरीद-विक्री) रतिज्ञान-भूषण-शिल्प-कला आदि कार्य शुभ हैं।

अथ नक्षत्राणां मैत्रादिसञ्ज्ञा—

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं 'मृदु' मैत्रं' भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरक्रीडा-मित्रकार्यं विभूषणम् ॥

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा नक्षत्र और शुक्र दिन 'मृदु' तथा 'मैत्र' सञ्ज्ञक हैं। इसमें गीत, वस्त्र, मित्र आदि का कार्य शुभ कहे गये हैं।

अथ नक्षत्राणां तीक्ष्णादिसंज्ञा—

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसञ्ज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा नक्षत्र, शनि दिन 'तीक्ष्ण' तथा 'दारुण' संज्ञक हैं। इनमें अभिचार, घात, उग्र भेद, पशु-दमादिक आदि कार्य शुभ कहे गये हैं।

अथ नक्षत्राणां अधोमुखादिसंज्ञा—

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम् ।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत् ॥

मूल, आश्लेषा, मिश्र और उग्र संज्ञक ये नक्षत्र अधोमुख सञ्ज्ञक हैं। आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा और ध्रुवसंज्ञक ये नक्षत्र ऊर्ध्वमुख संज्ञक हैं। अनुराधा, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी ये नक्षत्र तिर्यङ्मुख संज्ञक हैं। इन नक्षत्रों में ऐसा ही कार्य करना शुभद होता है, जैसे अधोमुख में कूप, पोखरा आदि बनवाना। ऊर्ध्वमुख में वृक्ष लगाना घर बनवाना आदि। तिर्यङ्मुख में पशुक्रय-विक्रय, पशुपालन आदि कार्य शुभ कहे गये हैं।

अथ शतपदचक्रविचारः—

चक्रं शतपदं वक्ष्ये भपाद्याक्षरसम्भवम् ।
नामादिवर्णतो ज्ञेया ऋक्षराश्यंशकास्तथा ॥
तिर्यगूर्ध्वगता रेखा रुद्रसङ्ख्या लिखेद् बुधः ।
जायते कोष्ठकानां तु शतमेकं न संशयः ॥
न्यसेदवकहडादीनि रुद्रादिविदिशि क्रमात् ।
पञ्च पञ्च क्रमेणैव शुद्धवर्णान्नियोजयेत् ॥
पञ्चस्वरसमायोगादेकैकं पञ्चधा कुरु ।
कुर्यात्कुघुमुदुस्थाने त्रीणि त्रीण्यक्षराणि च ॥

कुघङछ-समाः स्तम्भे रौद्रे त्वीशानगोचरे।
पूषणठसमाः स्तम्भे हस्ते आग्नेयसंज्ञके॥
भूधफढाः प्रथमाषाढे स्तम्भे नैर्ऋत्यगोचरे।
दु-स्थाने थझञा वायौ स्तम्भ उत्तरभाद्रके॥
आर्द्रा हस्तस्तथाषाढपूर्वोत्तरपदाभिधे।
एवं स्तम्भचतुष्कं च ज्ञातव्यं स्वरवेदिभिः॥
धिष्ण्यानि कृत्तिकादीनि प्रत्येकं चतुरक्षरैः।
साभिजित्यं शकास्तस्य शतैकं द्वादशाधिकम्॥

प्रथम तिर्यक् तथा ऊर्ध्वाधररूप समानान्तर एकादश रेखा लिखे जिससे शत सङ्ख्या का कोष्ठक बनेगा। जिस के ऐशान कोण में अ, ब, क, ह, ड इनको क्रम से अ, इ, उ, ए, ओ स्वरों से साथ मिलाने से २५ प्रकार बनता है। जैसे–अ-व-क–ह,–ड,–इ-वि-कि-हि-डि,–उ–वु–कु–हु–डु,–ए–वे–के–हे–डे, ओ वो–को–हो–डो, इनको ऐशान्यकोण में रखना,

इसी प्रकार म, ट, प, र, त इन को उक्त पञ्चस्वरों के साथ मिलाकर पहले कहे हुए के अनुसार २५ अक्षर आग्नेय कोण में लिखना।

एवं न, य, भ, ज, ख तथा ग, स, द, च, ल को भी यथोक्त रूप से स्वरों के साथ मिलाकर पचीस २ अक्षरों को क्रमशः नैर्ऋत्य तथा वायव्यकोण में लिखना।

प्रतीत्यर्थ नीचे क्षेत्र-रचना की गई है।

अ	व	क	ह	ड	म	ट	प	र	त
इ	वि	कि	हि	डि	मि	टि	पि	रि	ति
उ	वु	घङछ कु	हु	डु	मु	टु	घ ण ठ पु	रु	तु
ए	वे	के	हे	डे	मे	टे	पे	रे	ते
ओ	वो	को	हो	डो	मो	टो	पो	रो	तो
न	य	भ	ज	ख	ग	स	द	च	ल
नि	यि	भि	जि	खि	गि	सि	दि	चि	लि
नु	यु	घ फ ढ भु	जु	खु	गु	सु	थझञ दु	चु	लु
ने	यें	भे	जे	खे	गे	से	दे	चे	ले
नो	यो	भो	जो	खो	गो	सो	दो	चो	लो

इस में ऐशानकोणस्थ पचीसकोष्ठक का नाम ऐशानस्तम्भ, आग्नेय का आग्नेयस्तम्भ तथा उसी प्रकार नैर्ऋत्य तथा वायव्यस्तम्भ भी कहा जाता है।

ऐशानादिस्तम्भ के कु, पु, भु, दु स्थानों में क्रमसे घङछ, षणठ, धफढ़, थझञ लिखना चाहिये।

अब यहाँ कृत्तिकादि से नक्षत्रगणना करने से अइउए कृत्तिका, ओववियु रोहिणी, वेवोककि मृगशिरा, कुघङछ आर्द्रा, केकोहहि पुनर्वसु, हुहेहोड पुष्य, डिहुडेडो आश्लेषा, ममिमुमे मघा, मोटटिटु पूर्वाफल्गुनी, टेटोपपि उत्तर-फल्गुनी, पुषणठ हस्त, पेपोररि चित्रा, रुरेरोत स्वाती, तितुतेतो विशाखा, ननि-नुने अनुराधा, नोययियु ज्येष्ठा, येयोभभि मूल, भुधफढ़, पूर्वाषाढा, भेभोजजि उत्तराषाढा, जुजेजोख अभिजित्, खिखुखेखो श्रवण, गगिगुगे धनिष्ठा, गोससिसु शतभिषा, सेसोददि पूर्वभाद्र, दुथझञ उत्तरभाद्र, देदोचचि रेवती, चुचेचोल अश्विनी, लिलुलेलो भरणी।

यहाँ ऊपर उक्त कोष्ठक देखने से ज्ञात होता है कि नौ नौ चरण में एक एक राशि होती है। जिस नक्षत्र के जिस चरण में जातक का जन्म हो तदनुसार अश्विन्यादि नक्षत्रों का चरणज्ञान होता है और इस चरण में जो वर्ण है वह उस जातक का नामाद्यक्षर होता है।

जैसे मृगशिरा नक्षत्र का तृतीय चरण में जिसका जन्म है उसका राशिनाम ककारादि अक्षर पर होगा इत्यादि।

ज्यौतिषार्क में शतपदचक्र का निम्नलिखित उद्धार है—

चूचेचोला पदेष्वाद्ये लीलूलेलो यमस्य भे।
आईऊए इमेऽग्नेर्भे ओवावीवू तथार्कभे॥
वेवोकाकी मृगे ख्याताः कुघङछस्तु रौद्रभे।
केकोहाही त्वदितिभे हूहेहोडा च पुष्यभे॥
डोडूडेडो इमे सार्पे मामीमूमे मघाभिधे।
मोटाटीटू तथा भाग्ये टेटोपाप्यर्यमर्क्षमे॥
पूषणठ तथा हस्ते पेपोरारीति चित्रभे।
रूरेरोता तथा स्वातौ तीतूतेतो द्विदैवभे॥
नानीनूने क्रमान्मैत्रे नोयायीयू इतीन्द्रभे।
येयोभाभीति मूलाख्ये भूधफढ जलस्य भे॥

भेभोजाजीति विश्वर्क्षे जूजेजोखाभिजिद्भवेत् ।
खीखूखेखो श्रुतौ ज्ञेया गागीगूगे च वासवे ॥
गोसासीसू जलेशर्क्षे सेसोदादीत्यजाङ्घ्रिभे ।
दूथझञ तथापान्त्ये देदोचाचीति पौष्णभे ॥
इति प्रोक्ता इमे पद्ये वर्णनामादिजाः स्फुटाः ।
ज्ञेया मेषादिराशीनां नवभिर्नवभिः पदैः ॥

यदि पूर्वपद्धति के अनुसार ङ, ण, ञ वर्णविशिष्टनक्षत्र का चरण हो तो उसके नाम के आरम्भ में ग, ज, ड वर्ण होता है ।

जन्म नाम को गोपन करना चाहिये । इसलिये प्रसिद्ध नाम के लिये किसी देवताविशेषपर दूसरा नाम धारण करना चाहिये ।

अथ संक्षेपेण लग्नानयनं प्रदर्श्यते—

लङ्कोदया विघटिका गजभानि गोङ्कदस्राख्निपक्षदहनाःक्रमगोत्क्रमस्थाः ।
हीनान्विताश्चरदलैःक्रमगोत्क्रमस्थैर्मेषादितो घटत उत्क्रमतस्त्विमे स्युः ॥

अत्र लङ्कोदयखण्डकानि—

मे० = २७८ = मी०	वृ० = २९९ = कु०	मि० = ३२३ = म०
क० = ३२३ = ध०	सिं० = २९९ = वृ०	क० = २७८ = तु०

अथ राशीनां स्वदेशोदयमानम्—

अष्टेन्दुपक्षाः शशिबाणपक्षा गुणाभ्ररामा गुणवेदरामाः ।
शैलाब्धिरामा वसुरामरामाः क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ॥

मिथिला में स्वदेशोदयखण्ड—

मे० = २१८ = मी०	वृ० = २५१ = कु०	मि० = ३०३ = म०
क० = ३४३ = ध०	सिं० = ३४७ = वृ०	क० = ३३८ = तु०

अथ राशीनां भुक्तिमानम्—

भुक्तिर्मेषे झषे सप्त वृषकुम्भपलाष्टके ।
मिथुने मकरे पंक्तिः पलान्येकादशापरे ॥

अत्र राशीनां भुक्तिमानानि—

मे० = ७ = मी०
वृ० = ८ = कु०
मि० = १० = म०

अपरराशीनामेकादश ११ ज्ञेयाः

उदाहरणम्—

शुभ शाके १७०३ सम्बत् १८३८ शाके ज्येष्ठशुक्लद्वादशीदण्डादिः १०।५६।

चित्रानक्षत्रदण्डादिः १।५१, तदुपरि स्वाती। वरीयान्योगदण्डादिः = ३७।२२ कुजवासरे श्रीसूर्यभुक्तवृषांशकाद्याः = १५।२३।४२। दिनमानम् = ३३।४४ रात्रिमानम् = २६।१६ श्रीमन्मार्त्तण्डमण्डलादर्द्धोदयादिष्टघटयः ९।१५, भयातम् = ७।२४, भभोगश्च – ५८।५९। अब यहां इस समय कौन लग्न होगा—यह प्रश्न है।

यथा—इष्टदण्ड = ९।१५, सूर्यांश = १५।२३।४२, इसको ८, वृष का भुक्त खण्डा से गुण दिया तो गुणनफल = १२०।१८४।३३६, इसको साठसे भाग देनेसे लब्धि = १।३ और अवयव को स्वल्पान्तर से छोड़ दिया। इसको वृषके स्वदेशोदय ४।११ में घटा देनेसे शेष = २।८, इसमें जितना खण्डा जोड़नेसे इष्ट में घट सके उतने ही राशि खण्डा जोड़कर घटा देना चाहिये। जो राशि-खण्ड न घटे वही लग्न जानना चाहिये।

जैसे—मिथुन और कर्क का उदयखण्डा का योग—१०।४६ इसको शेष में जोड़ने से = १२।५४। यह इष्टमें नहीं घटा, मिथुन तक का योग घट जाता है अतः कर्क लग्न हुआ। इसी प्रकार काशी के उदयमान पर से काशी का लग्न मान होगा। अत एव नीचे काशी का उदयमान दिया गया है।

काशी का उदयमान—

मे० = २२१ = मी०	वृ० = २५३ = कु०	मि० = ३०४ = म०
क० = ३४२ = ध०	सि० = ३४५ = वृ०	क० = ३३५ = तु०

अथ भयातभभोगानयनम्—

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ताः।
भयातसञ्ज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहितो भभोगः॥

जिस नक्षत्र में जन्म है उससे पूर्व नक्षत्रको गत नक्षत्र कहते हैं। गत नक्षत्र के मान को साठ में घटाकर शेष में इष्ट घटी जोड़ने से भयात का मान निकलता है। शेष में जन्म नक्षत्र का मान जोड़ दें तो भभोग होता है।

जैसे—सं० १९९५ शाके १८६० भाद्र शुक्लपक्ष पञ्चमी मङ्गलवार को जन्म नक्षत्र स्वाती ४७।४ गत नक्षत्र चित्रा ४५।३४ इष्टघटी ३४।४५।

अब गत नक्षत्र को ६० में घटाने से शेष १४।२६, इसमें इष्टघटी जोड़ने से भयात ४९।११, और शेष में स्वाती का मान जोड़ने से भभोग ६१।३०। इसी प्रकार सब जगह जानना चाहिये।

इति होडाचक्रं समाप्तम्।

ज्यौतिषग्रन्थाः—

१ ग्रहलाघवम् । विश्वनाथी संस्कृत टीका तथा 'माधुरी' हिन्दी टीका ३-५०
२ पञ्चाङ्गविज्ञानम् । हिन्दी टीका सहित ०-५०
३ प्रश्नभूषणम् । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीका ०-७५
४ मानसागरी । 'सुबोधिनी' हिन्दी व्याख्या सहित ८-००
५ जन्मपत्रदीपकः । सोदाहरण सटिप्पण हिन्दी टीका १-२५
६ जातकपारिजातः । सुधाशालिनी-विमला संस्कृत-हिन्दी टीका १२-००
७ जातकाभरणम् । सपरिशिष्ट 'विमला' हिन्दी टीका सहित ४-००
८ जातकालङ्कारः—हरभानुदत्तकृत संस्कृत तथा भावबोधिनी हिन्दी टीका १-००
९ जैमिनीयसूत्रम् । सोदाहरण 'विमला' संस्कृत हिन्दी टीकाद्वयोपेत २-००
१० ताजिकनीलकण्ठी । गंगाधरमिश्रकृत 'जलदगर्जना' सं. हि. टीका ४-५०
११ दैवज्ञकामधेनुः । म० म० पं० अनवमदर्शीसंघराजवर सङ्कलित ६-००
१२ बीजगणितम् । जीवनाथी संस्कृत तथा 'विमला' हिन्दी टीकायुत ८-००
१३ बृहज्ज्योतिषसारः । हिन्दी भाष्य, विवरण व्याख्या सहित ४-५०
१४ बृहज्जातकम् । सोदाहरणोपपत्ति 'विमला' हिन्दी टीका सहित ३-५०
१५ बृहत्संहिता । सोदाहरण 'विमला' हिन्दी टीका सहित ९-००
१६ मुहूर्त्तमार्तण्डः । 'मार्तण्डप्रकाशिका' संस्कृत हिन्दी टीका सहित ३-००
१७ मुहूर्तचिन्तामणिः । सटिप्पण 'पीयूषधारा' व्याख्या सहित ५-००
१८ मुहूर्तचिन्तामणिः । पीयूषधारानुसारा हिन्दी व्याख्या सहित ३-००
१९ रमलनवरत्नम् । 'विमला' हिन्दी टीका सहित २-००
२० लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी । सोदाहरण-'सुबोधिनी' सं० हि० टीका १-२५
२१ लीलावती । सोदाहरण 'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ४-००
२२ शिशुबोधः । विमला भा.टी. ०-६५ २३ योगिनीजातकः । 'विमला' टी. ०-३५
२४ शीघ्रबोधः । अनूपमिश्रकृत 'सरला' हिन्दी टीका सहित १-००
२५ षट्पंचाशिका । विभा संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ०-४५
२६ वास्तुरत्नावली । सोदाहरण 'सुबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या २-५०
२७ वास्तुरत्नाकर । अहिबलचक्रसहित ३-००
२८ ज्यौतिषप्रश्नफलगणना । 'विमला' हिन्दी व्याख्या (अतिप्राचीन ग्रन्थ) १-००

प्राप्तिस्थानम्—चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१